सतना
01 मई 2025 गुरुवार

दैनिक
मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

आईपीएल में कुलदीप...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

डर से सहमे पाकिस्तान के रक्षामंत्री ख्वाजा आसिफ

इस्लामाबाद (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के बाद भारत क्या करने वाला है, इसकी कल्पना मात्र से ही पाकिस्तान के पसीने छूटने लगे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस आतंकी हमले के बाद साफ कह दिया था कि आतंकवादियों को उनकी कल्पना से बड़ी सजा मिलेगी। लिहाजा इस बारे में सोचकर ही पाकिस्तान को घबराहट होने लगी है। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने बुधवार को कहा कि दोनों पड़ोसी देशों के बीच तनाव कम करने के लिए विभिन्न देशों की ओर से किये जा रहे प्रयासों के बावजूद समय गुजरने के साथ भारत के साथ संघर्ष की आशंकाएं

बढ़ती जा रही हैं। पाकिस्तान के रक्षामंत्री के अनुसार भारत हमला करने वाला है। आसिफ ने यह टिप्पणी संसद के बाहर मीडिया से बात करते हुए की, जहां उनसे देश की सुरक्षा स्थिति के बारे में पूछा गया था। उन्होंने कहा, ''समय गुजरने के साथ संघर्ष की आशंकाएं बढ़ती जा रही हैं, कम नहीं हो रही हैं। हालांकि कई देश इस स्थिति को टालने की कोशिश कर रहे हैं।'' आसिफ ने पाकिस्तान पर किसी भी हमले की स्थिति में भारत को उचित जवाब देने की प्रतिबद्धता जताई, लेकिन पाकिस्तानी कार्रवाई का ब्योरा देने से इनकार कर दिया। पाकिस्तान के रक्षामंत्री ने कहा, ''यदि भारत की ओर से कोई उल्लंघन किया जाता है, तो हम जवाब देंगे और हमारी प्रतिक्रिया भारतीय कार्रवाई पर निर्भर करेगी। आसिफ ने भारत के हमला करने पर जवाबी हमला करने की भी धमकी दी।'' उन्होंने कहा, ''हमारी प्रतिक्रिया के बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिए।'' मगर ÷भारत को समझदारी दिखानी होगी। उन्होंने पहलगाम आतंकी हमले में पाकिस्तान का हाथ होने से इनकार किया।

पहलगाम आतंकी हमले पर भारत-पाकिस्तान के बीच बढ़े तनाव से चिंतित हुआ सऊदी अरब

दुबई (एजेंसी)। सऊदी अरब ने भारत और पाकिस्तान के बीच सीमा पर पहलगाम आतंकी हमले के बाद बढ़े तनाव को लेकर गहरी चिंता जाहिर की है। वास्तविक नियंत्रण रेखा पर भारत गणराज्य और इस्लामिक गणराज्य पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव और सीमावर्ती क्षेत्रों में जारी गोलीबारी पर सऊदी ने अपनी चिंता व्यक्त की है। सऊदी अरब के विदेश मंत्रालय ने ऐसी परिस्थिति में दोनों देशों से तनाव कम करने, आगे तनाव बढ़ने से बचने और कूटनीतिक तरीकों से विवादों को सुलझाने का आह्वान किया है। सऊदी के विदेश मंत्रालय ने एक ट्वीट करके भारत-पाकिस्तान को लेकर अच्छे पड़ोसी के सिद्धांतों को कायम रखते हुए स्थिरता और शांति की दिशा में काम करने की अपील की है, ताकि दोनों देशों और क्षेत्र के लोगों के हितों को पूरा किया जा सके। बता दें कि सऊदी अरब इस्लामिक मुल्क है, लेकिन उसके रिश्ते पाकिस्तान की तुलना में भारत से कई गुना अधिक प्रगाढ़ हैं। पीएम मोदी और सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के दोस्ताना संबंध काफी मधुर हैं। पीएम मोदी के कहने पर सऊदी अरब में सबसे बड़ा हिंदू मंदिर का निर्माण कराया गया है।

'खाने के बिल पर सेवा शुल्क हो अनिवार्य'

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाई कोर्ट भोजन के बिल पर सेवा शुल्क अनिवार्य करने के खिलाफ दिए गए आदेश को चुनौती देने वाली रेस्तरां निकायों की याचिकाओं पर 9 मई को सुनवाई करेगा। यह मामला नेशनल रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया और फेडरेशन ऑफ होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ओर से दाखिल अपीलों से जुड़ा है। ये अपीलें मुख्य न्यायाधीश डी. के. उपाध्याय और न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की पीठ के समक्ष पेश की गईं। इन निकायों ने केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (छ्ष्छ्क) के 4 जुलाई 2022 को जारी किए गए उन दिशा-निर्देशों को चुनौती दी है, जिनमें होटलों और रेस्तरां को सेवा शुल्क को भोजन बिल पर अनिवार्य रूप से वसूलने से रोक दिया गया था। रेस्तरां निकायों की पूर्व में दायर याचिकाओं को दिल्ली हाई कोर्ट के एकल न्यायाधीश ने 28 मार्च 2025 को खारिज कर दिया था। उस फैसले में न्यायालय ने छ्ष्छ्क के दिशा-निर्देशों को वैध ठहराते हुए कहा था कि अनिवार्य सेवा शुल्क उपभोक्ताओं के अधिकारों के खिलाफ है। न्यायालय ने प्रत्येक याचिकाकर्ता पर 1 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया था, जिसे उपभोक्ता कल्याण कोष में जमा करने का निर्देश दिया गया। एकल न्यायाधीश ने अपने आदेश में कहा था कि अनिवार्य सेवा शुल्क लगाना जनहित के खिलाफ है और इससे उपभोक्ताओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। न्यायालय ने इसे ÷दोहरी मार÷ बताया, क्योंकि उपभोक्ताओं को पहले ही सेवा कर और फिर माल एवं सेवा कर (त्स्ज्ञ) का भुगतान करने के लिए मजबूर किया जाता है।

2 हजार करोड़ के क्लासरूम स्कैम का है आरोप

मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन के खिलाफ केस दर्ज

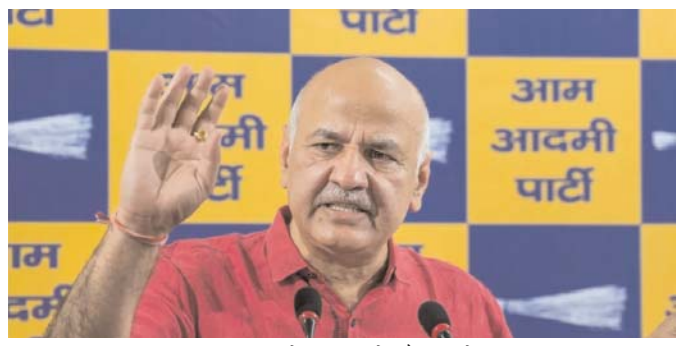

नई दिल्ली (एजेंसी)। भ्रष्टाचार निरोधक शाखा यानी एसीबी ने आम आदमी पार्टी के नेता और दिल्ली सरकार में पूर्व में मंत्री रह चुके मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन के खिलाफ केस दर्ज किया है। यह केस सरकारी स्कूलों में कक्षाओं के निर्माण से जुड़े कथित भ्रष्टाचार घोटाले का है। एसीबी के अनुसार, यह घोटाला करीब 2,000 करोड़ रुपये का है, जो आप सरकार के कार्यकाल के दौरान 12,748 कक्षाओं और संबंधित इमारतों के निर्माण से संबंधित है। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17-ए के तहत सक्षम प्राधिकारी से आवश्यक मंजूरी मिलने के बाद एसीबी ने मामला दर्ज किया। एजेंसी ने कहा कि पूरी परियोजना में महत्वपूर्ण अनियमितताएं और लागत में वृद्धि देखी गई। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा गया, ÷निर्धारित समय सीमा के भीतर एक भी काम पूरा नहीं हुआ।÷ उन्होंने कहा कि सलाहकारों और वास्तुकारों को उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना नियुक्त किया गया था। भ्रष्टाचार निरोधक एजेंसी ने यह भी संकेत दिया कि लागत में वृद्धि कथित तौर पर

इन अनियमित रूप से नियुक्त सलाहकारों के माध्यम से की गई थी, जिससे बजट और बढ़ गया। पिछले एक साल में सिसोदिया और जैन दोनों ही भ्रष्टाचार के अलग-अलग मामलों में जांच के दायरे में हैं। सिसोदिया पहले से ही दिल्ली आबकारी नीति मामले के संबंध में सीबीआई और ईडी की जांच का सामना कर रहे हैं, जबकि जैन को पहले मनी लॉन्ड्रिंग मामले में गिरफ्तार किया गया था। अधिक विवरण की प्रतीक्षा है।

मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन के ऊपर आरोप है कि उन्होंने क्लासरूम बनाने में लागत से 5 गुना ज्यादा पैसे खर्च किए। साथ ही उन्होंने 34 ठेकेदारों काम दिए, जिसमें से ज्यादातर आम आदमी पार्टी से जुड़े हुए थे। मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन पर आरोप है कि उन्होंने सीवीसी रिपोर्ट 3 साल तक दबाकर रखी। साथ ही उन्होंने समय पर काम पूरा नहीं किया। परियोजना जून 2016 तक पूरी होनी थी, लेकिन समय सीमा और लागत दोनों का उल्लंघन हुआ है। साथ ही इन नेताओं पर आरोप है कि उन्होंने कॉन्ट्रैक्ट की मूल लागत में भारी बढ़ोत्तरी की।

शादी कर के विदा हो रही दुल्हन को किया किडनैप

सारण (एजेंसी)। बिहार के सारण जिले हैरान कर देने वाली वारदात सामने आ रही है। यहां जिले के बनियापुर में नई नवेली दुल्हन को विदा करा के घर लौट रहे दूल्हे की पिटाई कर के दुल्हन को अगवा

कर लिया गया है। जानकारी के मुताबिक, कार सवार चार मनचलों ने इस घटना को अंजाम दिया और दूल्हे को पीटकर दुल्हन को अगवा कर के ले गए। इस घटना की सूचना सामने आने के बाद पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। दरअसल, ये पूरा मामला सारण के बनियापुर में जनता बाजार थाना क्षेत्र के ससना इलाके का है। यहां कार सवार चार मनचलों ने नई नवेली दुल्हन को विदा करा के घर लौट रहे दूल्हे की पिटाई की और फिर दुल्हन को अगवा कर लिया। घटना का विरोध करने पर दूल्हे और उसके साथ मौजूद दुल्हन की बहन की पिटाई भी की गई। टिआगो कार पर चार की संख्या में आये लोगों ने दूल्हे की ब्रेजा कार से दुल्हन को जबरन अपने कार में बैठा लिया और मौके से निकल गए। अगवा करने आये लोगों में शामिल एक युवक दावा कर रहा था कि दुल्हन उसकी प्रेमिका है।

पीएम मोदी ने ऑपरेशनल निर्णय के लिए सेना को दी खुली छूट

बुधवार शाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आवास पर बड़ी बैठक हुई

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले के बाद सुरक्षा के मोर्चे पर भारत सरकार काफी सक्रिय हो गई है। सुरक्षा से जुड़ी लगातार बड़ी बैठकें हो रही हैं। बुधवार शाम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आवास पर बड़ी बैठक हुई। इस बैठक में विदेश मंत्री एस जयशंकर और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल मौजूद रहे।

मंगलवार को भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने आवास पर हाईलेवल मीटिंग की थी, जिसमें रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान और तीनों सेनाओं के प्रमुखों ने हिस्सा लिया। कल की बैठक में पीएम मोदी ने सेना को खुली छूट दी कि पाकिस्तान के खिलाफ वो जो चाहे फैसले ले सकते हैं। पीएम मोदी ने हाईलेवल मीटिंग के बाद कहा कि मुझे अपनी सेना पर पूरा भरोसा है, पाकिस्तान को सेना अपने हिसाब से जवाब दे। पाकिस्तान पर फैसला लेने के लिए सेना आजाद है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि आतंकवाद को करारा जवाब देना हमारा दृढ़ राष्ट्रीय संकल्प है। पीएम ने भारतीय सैन्य बलों की पेशेवर क्षमताओं में पूर्ण विश्वास व्यक्त किया और कहा कि हमारी जवाबी कार्रवाई का तरीका क्या हो, इसके टार्गेट्स कौन-से

हों और इसका समय क्या हो, इस प्रकार के ऑपरेशनल निर्णय लेने के लिए सैन्य बलों को खुली छूट है।बता दें कि पहलगाम में आतंकवादियों ने 26 लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी थी। आतंकियों ने लोगों की धार्मिक पहचान पूछने के बाद उनकी हत्या की। इस आतंकी हमले की जिम्मेदारी पाकिस्तान के लश्कर-ए-तैयबा के सहयोगी संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट (ञ्ज्ररुस्न) ने ली है। इस हमले के अगले दिन भारत सरकार ने पाकिस्तान के खिलाफ कई सख्त कदम उठाए, जिनमें सिंधु जल संधि को निलंबित करना, अटारी बॉर्डर को बंद करना और भारत में रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों को वीजा अवधि समाप्त होते ही देश छोड़ने का अल्टीमेटम दे दिया।

'हम मोदी सरकार को सपोर्ट करते हैं'

जाति जनगणना और पहलगाम हमले पर राहुल गांधी का बड़ा बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने केंद्र सरकार के जाति जनगणना के फैसले का स्वागत किया है और कहा है कि हम इस फैसले का सपोर्ट करते हैं लेकिन सरकार को इसकी टाइमलाइन बतानी चाहिए। राहुल गांधी ने ये भी कहा कि इसकी डिजाइन हम बनाएंगे। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने पार्टी मुख्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि ÷हमने संसद में कहा था कि हम जाति जनगणना करवाएंगे। हमने यह भी कहा था कि हम 50 प्रतिशत की सीमा को तोड़ देंगे जो एक कृत्रिम दीवार थी। मुझे नहीं पता कि 11 साल बाद क्या हुआ जब कैबिनेट ने जाति जनगणना की घोषणा की, जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते थे कि केवल चार जातियां हैं।÷

तेलंगाना जाति जनगणना के लिए एक मॉडल बन गया है, जो एक खाका हो सकता है। हम सरकार को जाति जनगणना की रूपरेखा तैयार करने का प्रस्ताव देते हैं। एक बिहार की रूपरेखा है और दूसरी तेलंगाना की, और दोनों में बहुत अंतर है। हम जाति

जनगणना के माध्यम से विकास का एक नया प्रतिमान लाना चाहते हैं। हम केंद्र से संस्थानों, सत्ता संरचनाओं आदि में ओबीसी, दलितों, आदिवासियों की भागीदारी के बारे में यह सवाल पूछ रहे हैं।

नरेंद्र मोदी को एक्शन लेना है अब पीएम मोदी तय करेंगे एक्शन कब लेना है। पहलगाम के आतंकियों को सजा मिलनी चाहिए। पहलगाम हमले में मारे गए लोगों को शहीद का दर्जा दिया जाना चाहिए।

मुक्केबाज एमसी मैरी कॉम ने पति से तलाक की पुष्टि की

अपने वकील के ज़रिए जारी किया कानूनी बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। 6 बार की विश्व चैंपियन मुक्केबाज एमसी मैरी कॉम ने अपने तलाक की पुष्टि कर दी है। मैरी कॉम ने बुधवार को अपने वकील के ज़रिए जारी किए गए एक कानूनी बयान के द्वारा ओंखोलर कॉम से तलाक की पुष्टि की है और हितेश चौधरी के साथ अपने अफेयर की अफवाहों को निराधार बताया है।

मैरी के वकील द्वारा जारी बयान में कहा गया, %इन अटकलों और गलत मीडिया रिपोर्टों के मद्देनजर, मैं निम्नलिखित स्पष्टीकरण जारी करना चाहता हूं कि एम सी. मैरी कॉम और ओन्खोलर (ओनलर) कॉम अब विवाहित नहीं हैं और उन्होंने 20 दिसंबर 2023 को दोनों परिवारों के सदस्यों और कबीले के नेताओं की मौजूदगी में कोम कस्टमरी लॉ के तहत आपसी सहमति से तलाक को अंतिम रूप दे दिया है।%

बयान में कहा गया, %मेरे मुवक्किल (मैरी) के हितेश चौधरी के साथ संबंधों में शामिल होने या किसी अन्य मुक्केबाज के पति के साथ रिश्ते में होने की अफवाहों का स्पष्ट रूप से खंडन किया जाता है और किसी भी मीडिया प्लेटफॉर्म द्वारा इसका प्रचार नहीं किया जाना चाहिए।%

मैरी ने मीडिया को अपने निजी जीवन में हस्तक्षेप करने से भी मना किया। मैरी के वकील ने कहा, %पिछले दो सालों से, मेरी मुवक्किल अपने निजी जीवन में, खासकर अपने पूर्व पति के साथ, बहुत ही चुनौतीपूर्ण समय से गुजर रही हैं। इस मुश्किल घड़ी में, मेरी मुवक्किल अपने दोस्तों, प्रशंसकों और शुभचिंतकों से अनुरोध करती है कि वे उसे इस मुश्किल समय से बाहर निकलने के लिए जरूरी जगह और गोपनीयता दें।% बयान में आगे कहा गया, %यह नोटिस सभी मीडिया संस्थाओं से, सभी रूपों में, मेरे मुवक्किल के बारे में निराधार अटकलें लगाने से बचने के लिए एक औपचारिक अनुरोध है।

दिल्ली में होगी झमाझम बारिश, इस हफ्ते कैसा रहेगा मौसम?

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की राजधानी दिल्ली में अगले कुछ दिनों में गर्मी से राहत मिलने की संभावना जताई जा रही है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (ढ्ढरूष्ठ) के अनुसार, आसमान में आंशिक रूप से बादल छाए रहने, बारिश और आंधी आने के कारण दिल्लीवासियों को गर्मी से कुछ राहत मिल सकती है। विभाग ने यह भी कहा कि सोमवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान 40.4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच

गया, जो सामान्य से 1.4 डिग्री अधिक था। मौसम के साप्ताहिक पूर्वानुमान के अनुसार, बुधवार तक दिल्ली में आंशिक रूप से बादल रह सकते हैं और शाम के समय हल्की बारिश एवं गरज के साथ छींटे पड़ने का अनुमान है। गुरुवार और शुक्रवार को गरज के साथ बारिश का अनुमान है, जिससे तापमान में गिरावट हो सकती है। विभाग ने आगामी कुछ दिनों के लिए हवाओं की रफ्तार 15 से 20 किलोमीटर प्रति घंटे तक रहने की संभावना जताई है, जो मौसम में हल्की ठंडक ला कर सकती है। मौसम विभाग ने मंगलवार, शुक्रवार और शनिवार के लिए %येलो अलर्ट% जारी किया है, जिसमें 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाओं के साथ हल्की बारिश की चेतावनी दी गई है। बता दें कि इस अलर्ट का अर्थ होता है कि लोग मौसम में बदलाव के लिए तैयार रहें।

हनुमानगढ़ी में 300 साल बाद टूटी पुरानी परंपरा, मंदिर से बाहर निकले पीठ के महंत

अयोध्या (एजेंसी)। यूपी के अयोध्या स्थित हनुमानगढ़ी में 300 साल बाद एक परंपरा टूटी है और पीठ के पीठाधीश महंत प्रेम दास, मंदिर से बाहर निकले हैं। अक्षय तृतीया के मौके पर महंत ने ये फैसला लिया और मंदिर परिसर से बाहर निकले। 300 सालों से

● महंत प्रेम दास जब मंदिर से बाहर निकले तो शाही जुलूस निकाला गया।

ज्यादा समय में पहली बार ऐसा हुआ है कि हनुमानगढ़ी के महंत, मंदिर से बाहर आए हैं। महंत प्रेम दास जब मंदिर से बाहर निकले तो नए बने राम मंदिर की ओर जाते समय एक शाही जुलूस भी निकाला गया। इसमें महंत के तमाम शिष्य, नागा और अन्य श्रद्धालु शामिल हुए। बता दें कि पहले के महंत ने ये परंपरा शुरू की थी

कि महंत अपने जीवन के दौरान हनुमानगढ़ी परिसर छोड़कर कहीं नहीं जाएंगे।

हनुमानगढ़ी के महंत संजय दास ने बताया, %इस परंपरा का 1737 से (288 साल) पालन किया जाता रहा है। महंत की भूमिका स्वयं को भगवान हनुमान को समर्पित करने की है। एक बार पीठ पर विराजमान होने के बाद वह इस मंदिर परिसर में ही जीता और मरता है। उसका शरीर मृत्यु के बाद ही यह परिसर छोड़ सकता है।%

संजय दास ने कहा, %यहां तक कि दीवानी मामले में भी अदालतों ने इस परंपरा का सम्मान किया है। आवश्यकता पड़ने पर इस अखाड़े का प्रतिनिधि अदालत में पेश होता है। वास्तव में, 1980 के दशक में अदालत ने महंत का बयान दर्ज करने के लिए हनुमानगढ़ी के भीतर सुनवाई की थी।%

दरअसल महंत प्रेम दास की राम मंदिर में जाने की इच्छा थी। निर्वाणी अखाड़ा के पंच परमेश्वर ने उनकी इस इच्छा का मान रखा और जीवन में एक बार बाहर निकलने की अनुमति दी। बता दें कि हनुमानगढ़ी, अयोध्या में हनुमानजी का सबसे सिद्ध मंदिर माना जाता है। मान्यता है कि राम मंदिर जाने से पहले इस मंदिर में आकर हनुमान जी के दर्शन जरूर करने चाहिए।

12 हजार से अधिक मरीजों ने घर बैठे लिया डॉक्टर से अपॉइंटमेंट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। आयुष्मान भारत निरामयम हेल्पलाइन सेवा से अब तक 12 हजार से ज्यादा मरीजों ने घर बैठे डॉक्टरों से अपॉइंटमेंट लिया है। यह सेवा पिछले एक साल से चल रही है। मरीजों को 25 से अधिक विशेषज्ञताओं के लिए अपॉइंटमेंट मिल रहा है। इससे समय की बचत हो रही है और इलाज जल्दी मिल रहा है। यह हेल्पलाइन सेवा आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ मिशन के तहत चलाई जा रही है। इसमें विलियम जे क्लिंटन फाउंडेशन का सहयोग है। टोल फ्री नंबर 18002332085 पर कॉल कर मरीज अपॉइंटमेंट बुक कर सकते हैं। कॉल करने पर मरीज को अपनी लोकेशन बतानी होती है। इसके आधार पर नजदीकी अस्पतालों के विकल्प दिए जाते हैं। मरीज अपनी सुविधा के अनुसार अस्पताल और समय चुनकर अपॉइंटमेंट ले सकता है। यह सुविधा सरकारी अस्पतालों में पहले से उपलब्ध है। अब इसे आयुष्मान भारत योजना से जुड़े निजी अस्पतालों तक भी बढ़ाया जा रहा है। इसमें 120 से अधिक अस्पताल शामिल हैं। यह सेवा सुबह 8 बजे से शाम 8 बजे तक उपलब्ध है। मरीज ओपीडी समय के अनुसार अपॉइंटमेंट ले सकते हैं। तय समय पर अस्पताल जाकर डॉक्टर से परामर्श लिया जा सकता है। टोल फ्री नंबर पर कॉल करके मरीज अपनी आभा आईडी भी बनवा सकते हैं। इसके लिए आधार कार्ड नंबर और आधार से लिंक मोबाइल नंबर देना होता है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि निजी अस्पतालों को भी इस सेवा से जोड़ा जा रहा है। यह सुविधा पूरी तरह निःशुल्क है। इससे मरीजों को बड़ी राहत मिल रही है।

भोपाल रेल मंडल ने 1288 दिव्यांग रियायत कार्ड जारी किए

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारतीय रेलवे ने दिव्यांग यात्रियों के लिए किराए में 25त्न से 75त्न तक की छूट दी है। यह सुविधा दृष्टिहीन, मानसिक रूप से अस्वस्थ, श्रवण और वाणी बाधित तथा ऑर्थोपेडिकली हैंडिकैप्ड यात्रियों को मिलती है। भोपाल मंडल ने नवंबर 2023 से अब तक 1288 दिव्यांग रियायत कार्ड जारी किए हैं। भोपाल मंडल दिव्यांग सेल की प्रभारी डॉ. ज्योति तिवारी ने बताया कि पहले सभी श्रेणियों के लिए एक ही फॉर्म का उपयोग होता था। अब रेलवे ने वर्ष 2025 से दृष्टिहीन यात्रियों के लिए अलग प्रारूप (एनेक्सचर-1) और अन्य तीन श्रेणियों के लिए अलग प्रारूप (एनेक्सचर-2) लागू किया है। दृष्टिहीनता 90त्न या उससे अधिक होने पर भी अब रियायत मिलती है। यदि दिव्यांग यात्री के साथ एक सहयोगी यात्रा करता है, तो उसे भी समान छूट मिलती है। रियायत कार्ड की जानकारी रेलवे के सॉफ्टवेयर में अपडेट होती है। टिकट बुकिंग के समय कार्ड की फोटो कॉपी दिखाकर छूट ली जा सकती है।

स्वास्थ्य विभाग में खाली पद जल्द भरें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने अधिकारियों से कहा है कि स्वास्थ्य विभाग में रिक्त पदों पर भर्ती का काम समय-सीमा का निर्धारण कर शीघ्रता से पूरा किया जाए। आवश्यकता होने पर नियमों में आवश्यक संशोधन करने और प्रक्रिया को सरल करने के संबंध में भी प्रस्ताव तैयार करें। उन्होंने वर्तमान में चल रही भर्ती प्रक्रिया की जानकारी भी प्राप्त की। उन्होंने स्वास्थ्य कर्मचारियों की वेतन विसंगति दूर करने और कर्मचारियों के ग्रेड-पे और एनएचएम कर्मियों को नियमित कर्मचारियों के समतुल्य सुविधाएं देने आदि पर विचार करने को कहा। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने मंगलवार को मंत्रालय में यह निर्देश स्वास्थ्य, सामान्य प्रशासन विभाग और कर्मचारी चयन मंडल के अधिकारियों की बैठक में दिए। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि आवश्यकता होने पर नियमों में आवश्यक संशोधन करने और प्रक्रिया को सरल करने के संबंध में भी प्रस्ताव तैयार करें।

सामान्य वर्ग के निर्धन छात्रों के लिये निःशुल्क कोचिंग और न्यूनतम आय सीमा बढ़ाने के भेजेंगे प्रस्ताव : मंत्री कुशवाह

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सामान्य निर्धन वर्ग के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये निःशुल्क कोचिंग तथा अन्य शासकीय योजनाओं का लाभ प्राप्त करने के लिये आय की न्यूनतम सीमा को बढ़ाये जाने का प्रस्ताव राज्य शासन को भेजा जायेगा। यह निर्णय सामाजिक न्याय, दिव्यांगजन कल्याण मंत्री तथा मध्यप्रदेश राज्य सामान्य वर्ग कल्याण आयोग के अध्यक्ष श्री नारायण सिंह कुशवाह की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में लिया गया।

मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि सामान्य वर्ग के गरीब हितग्राहियों को राज्य शासन की विभिन्न योजनाओं का लाभ प्राथमिकता के साथ उपलब्ध कराने के लिये आयोग गठित किया गया है। मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि आयोग के माध्यम से 11 विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि स्कूल शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार, चिकित्सा शिक्षा एवं उच्च शिक्षा विभाग द्वारा विभिन्न छात्रवृत्ति एवं प्रोत्साहन योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं से दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि को भी बढ़ाये जाने की आवश्यकता है। उन्होंने उच्च शिक्षा ऋण गारंटी योजना के तहत भी निर्धारित 100 विद्यार्थियों की अधिकतम सीमा को बढ़ाये जाने की आवश्यकता जताई। मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि आयोग

द्वारा इन सभी योजनाओं में वृद्धि के प्रस्ताव शासन को भेजे जायेंगे।

मंत्री श्री कुशवाह ने पशुपालकों के लिये पशुपालन विभाग द्वारा संचालित आचार्य विद्यासागर गौ-संवर्धन योजना को प्रोत्साहित करने के निर्देश भी दिये। योजना में वर्ष 2024-25 में 1559 पशुपालकों को 5 करोड़ 20 लाख से अधिक की अनुदान राशि उपलब्ध करायी गयी है। उन्होंने योजना के व्यापक प्रचार-प्रसार के निर्देश पशुपालन विभाग के अधिकारियों को दिये।

बैठक में सामाजिक न्याय, पशुपालन, स्कूल शिक्षा, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा और संस्थागत वित्त विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

सीएनजी वाहनों को लाइफटाइम व्हीकल टैक्स में मिलेगी छूट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य सरकार ने इलेक्ट्रिक व्हीकल नीति के बाद अब सीएनजी वाहनों को बढ़ावा देने का फैसला किया है। इसके तहत फैक्ट्री फिटेड सीएनजी किट युक्त सभी नए वाहनों को लाइफटाइम व्हीकल टैक्स में छूट दी जाएगी। यह छूट अलग-अलग कैटेगरी के वाहनों के लिए अलग-अलग तय की गई है। परिवहन विभाग ने इसके लिए नोटिफिकेशन भी जारी कर दिया है।

परिवहन विभाग के जारी नोटिफिकेशन के अनुसार, ऐसे हाइब्रिड ईंधन स्रोत युक्त वाहन, जिनमें सीएनजी के साथ अन्य ईंधन भी शामिल है या जिनमें बाद में सीएनजी किट फिट कराई गई है (रेट्रो फिटमेंट), उन्हें इस छूट का

लाभ नहीं मिलेगा। यह छूट केवल उन्हीं वाहनों को दी जाएगी जो फैक्ट्री फिटेड सीएनजी किट के साथ आते हैं और जिनका पंजीकरण सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन नीति 2025 के तहत एक वर्ष की अवधि में किया जाएगा। इन वाहनों को लाइफटाइम व्हीकल टैक्स में 1 प्रतिशत की छूट मिलेगी।

शार्ट सर्किट को हल्के में न लें, तुरंत ठीक करवाएं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने आमजन को आगाह किया है कि घर अथवा संस्थान में कहीं भी शार्ट सर्किट हो रहा है तो उसे हल्के में न लें, बल्कि तुरंत इलेक्ट्रिशियन को बुलाकर ठीक करवाएं। जरा सी असावधानी किसी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है। इसके लिए आमजनों को भी करंट से होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम में सहयोग करना आवश्यक है।

कंपनी ने कहा है कि यदि घरों में अर्थिंग नहीं है तो वायरिंग के पहले अर्थिंग जरूर दें। इसके साथ ही घटिया या सस्ती वायरिंग की बजाय मानक स्तर की वायरिंग करवाएं, इससे शार्ट सर्किट से होने वाली हानियों से बचा जा सके। एक अनुमान के मुताबिक ज्यादातर शार्ट सर्किट की घटनाएं या तो घटिया वायरिंग के कारण होती हैं, या फिर ज्यादा समय से पुरानी वायरिंग होने के चलते शार्ट सर्किट की घटनाएं होती हैं। इसलिए जरा सी लापरवाही महंगी पड़ सकती है। बिजली कंपनी आपको पुरानी वायरिंग की जगह मानक स्तर की नई वायरिंग करवाने की सलाह देती है, जिससे शार्ट सर्किट की घटनाओं से बचा जा सके। विद्युत लाइनों से संबंधित किसी भी तरह की शिकायत हों तो तत्काल कॉल सेंटर के टोल फ्री नं. 1912 पर, उपाय ऐप एवं समीप के वितरण केन्द्र कार्यालय

में जानकरी अवश्य दें। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने कहा है कि घरेलू विद्युत उपकरणों, वायरिंग, स्विच इत्यादि को स्वयं सुधारने के बजाय किसी प्रशिक्षित इलेक्ट्रीशियन की सेवाएं लें। मानव जीवन अमूल्य है। बिजली के स्विच, सॉकिट, बिजली उपकरण बच्चों की पहुंच से दूर रखें। स्वीकृत भार से अधिक लोड का उपयोग न करें। उचित क्षमता के एम.सी.सी.बी, कट-आउट लगाने के साथ ही अच्छी गुणवत्ता की वायरिंग का ही उपयोग करें। वर्ष में एक बार अपने परिसर की वायरिंग, फिटिंग, अर्थिंग अनुभवी एवं दक्ष इलेक्ट्रीशियन से अवश्य जांच कराएं, जिससे शॉर्ट सर्किट की दुर्घटनाओं से बचा जा सके।

अक्षय तृतीया पर भोपाल में सामूहिक विवाह सम्मेलन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अक्षय तृतीया पर भोपाल में सामूहिक विवाह सम्मेलन हो रहे हैं। फंदा में 151 जोड़े विवाह सूत्र में बंधें। विधायक रामेश्वर शर्मा भी मौजूद रहे। इस दौरान सभी जोड़ों को उपहार में श्रीरामचरित मानस दी गई। जनपद अध्यक्ष प्रमोद राजपूत ने बताया कि मुख्यमंत्री कन्या दान योजना के तहत आयोजन हुआ। कुल 151 जोड़े शामिल रहें। वैदिक मंत्रोच्चार के साथ दूल्हा-दुल्हन विवाह सूत्र में बंधे। इधर, अक्षय तृतीया पर कोई बाल विवाह न हो, इसलिए जिला प्रशासन की टीमें नजर रख रही है। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने टीमें बनाई हैं। अखिल भारतीय पाल महासभा द्वारा बिट्टन मार्केट स्थित दशहरा मैदान में 51 जोड़ों का सामूहिक विवाह होगा। श्री 360 गौत्रिय खटीक समाज सकल पंच? भोपाल द्वारा 11 जोड़ों का सामूहिक विवाह शाहजहांनी पार्क में?आयोजित होगा। फूल माली समाज ईंटखेड़ी में होने वाले सामूहिक? विवाह सम्मेलन में 19 जोड़ों का विवाह होगा। मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत जंबूरी मैदान में सामूहिक सामूहिक विवाह आयोजन के लिए 51 जोड़ें विवाह सूत्र में बंधे।

वीआईपी रोड समेत 5 जगह नहीं चलेंगे ई-रिक्शा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। वीआईपी रोड, लिंक रोड नंबर एक और दो, एसवी पॉलिटेक्निक से रेतघाट और लालघाटी चौराहे से गांधी नगर मेन रोड पर ई-रिक्शा चलाने पर रोक होगी। सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में रखे इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल सकती है। यातायात पुलिस ने ई-रिक्शा संचालन पॉलिसी तैयार की है।

आरटीओ की मौजूदगी में पीडब्ल्यूडी, स्मार्ट सिटी और नगर निगम के जिम्मेदारों के साथ इस पर चर्चा कर लागू किया जाएगा। पॉलिसी में तय किया गया है कि जिन रोड पर वाहनों की स्पीड लिमिट 20 किमी से ज्यादा निर्धारित है वहां ई-रिक्शा बाईं ओर चलेंगे। ई-रिक्शा का संचालन यातायात पुलिस की जोन क्षेत्र की व्यवस्था के तहत ही संचालन किया जाए। प्रंगमहल, नेहरू नगर, रेलवे स्टेशन, कोलार और बैरागढ़ आदि क्षेत्रों में इनके लिए अलग स्टॉप बनाए जाएंगे। ई-रिक्शा सिर्फ स्टॉप से ही सवारी ले सकेंगे। कहीं भी रोककर सवारी नहीं लेंगे। कॉलोनी से मुख्य सड़क के बीच चलाए जाएंगे। इनके स्टॉप भी मुख्य सड़क से पहले बनाए जाएंगे। परमिट और रूट भी तय किए जाएंगे। इन पर रूट के मुताबिक मोनो दिया जाएगा, इनकी पहचान आसान होगी। ई-रिक्शा चालकों को भी वर्दी पहननी होगी, नेम प्लेट भी लगानी होगी।

अयोध्या बायपास चौड़ीकरण का कार्य एक जून से शुरू होगा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल में रत्नागिरी से आशाराम तिराहे तक 16 किलोमीटर लंबे अयोध्या बायपास मार्ग का चौड़ीकरण का कार्य एक जून से शुरू होगा। इस मार्ग की चौड़ीकरण की लागत 836 करोड़ रूपये है। इसे 2 वर्ष की समयावधि में पूरा किया जायेगा। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने मंगलवार को मंत्रालय निर्माण एजेंसी एनएचएआई के अधिकारियों और संबंधित विभागों के अन्य अधिकारियों निर्माण कार्य की प्रगति को लेकर समीक्षा बैठक की।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि निर्माण के दौरान आने वाली किसी भी कठिनाई के निराकरण के लिये

अधिकारियों से तुरंत संपर्क करें। कठिनाई का तुरंत निराकरण किया जायेगा। इस कार्य में विलंब नहीं होना चाहिए, 2 वर्ष की तय समय-सीमा में तैयार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह प्रदेश का आदर्श रोड होगा। इसमें फ्लाई ओवर आदि का निर्माण भी शामिल है। एनएचएआई के इस प्रोजेक्ट के डारेक्टर श्री देवांश नरवाल ने बताया कि अयोध्या बायपास चौड़ीकरण का कार्य तय समय-सीमा में पूरा होगा। इसमें सबसे पहले सर्विस रोड बनाई जायेगी ताकि यातायात बाधित नहीं हो।

बैठक में बताया गया कि अयोध्या बायपास चौड़ीकरण में आने वाले पेड़ों को हटाया जायेगा। हटाये जाने वाले पेड़ों के स्थान पर हटाये गये पेड़ों की संख्या के 4 गुना से अधिक पेड़ लगाये जायेगें। प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्री नरवाल ने बताया कि सड़क चौड़ीकरण में आने वाले विद्युत पोल और पाइप लाईन आदि को समय पर शिफ्ट किया जायेगा। बैठक में आनंद नगर फ्लाई ओवर निर्माण, रत्नागिरी तिराहे पर मेट्रो रेल फ्लाई ओवर निर्माण सहित अन्य निर्माण कार्यों की समीक्षा की गई।

राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने आनंद नगर फ्लाई ओवर निर्माण के लिये भूमि अधिग्रहण के कार्य को अगले एक सप्ताह में पूरा करने के निर्देश दिये।

हर बूंद की कीमत जन सहयोग से हो रहा जल संवर्धन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जल संचयन का संकल्प प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्पों को साकार करने के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जल गंगा संवर्धन अभियान पूरे प्रदेश में 30 मार्च से प्रारंभ किया है, जो 30 जून तक संचालित होगा। यह अभियान जन-जन के जीवन से जुड़ा महत्वपूर्ण अभियान है। जल गंगा संवर्धन अभियान जनसहभागिता से जल संरक्षण और संवर्धन की अवधारणा पर आधारित है। इस अभियान में नए जल संग्रहण संरचनाएं बनाई जाएंगी और पहले से मौजूद संरचनाओं का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। साथ ही जल स्रोतों और जल वितरण प्रणालियों की सफाई तथा उनके आसपास पौधारोपण किया जा रहा है । समाज की

सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं। अभियान समाज और सरकार की संयुक्त पहल से एक जन आंदोलन बनता जा रहा है।

महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती निर्मला भूरिया झाबुआ जिले के पेटलावद जनपद की ग्राम पंचायत करड़ावद के ठिकरिया तालाब पर जल गंगा संवर्धन अभियान में जल चौपाल कार्यक्रम में शामिल हुईं। मंत्री श्रीमती भूरिया ने कहा कि पेटलावद क्षेत्र को माही डेम की सौगात स्व. दिलीप सिंह भूरिया के अथक प्रयासों से मिलने के कारण आज पेटलावद में हरियाणा, पंजाब जैसी कृषि होने लगी है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के अनेक पुराने तालाबों से किसान अपनी फसलों की सिंचाई के लिये पानी लेते आ रहे हैं। वर्तमान में तालाब में पानी खत्म हो गया है। ऐसी स्थिति में सभी किसानों को जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत तालाबों से काली मिट्टी जन-भागीदारी से निकालकर अपने-अपने खेतों में ले जायें, जिससे उनके खेतों की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होगी। मंत्री श्रीमती भूरिया ने ग्रामीणों से अपील की कि इस महत्वपूर्ण अभियान में आगे आयें एवं जल-स्रोतों की साफ-सफाई और जल संग्रहण के कार्य में भागीदारी निभायें, जिससे वर्तमान जल संकट से आने वाली पीढ़ी को बचाया जा सके। इस अवसर पर 100 बालिकाओं ने कलश यात्रा निकाल कर जल संरक्षण का संदेश दिया गया।

एम.पी. ट्रांसको के 400 के.व्ही. सब-स्टेशन छैगांव को मिलेगी सिंगाजी पॉवर प्लांट व जुलवानिया से सीधी विद्युत आपूर्ति

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया है कि मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एम.पी. ट्रांसको) ने 400 के.व्ही. सबस्टेशन छैगांव को सिंगाजी थर्मल पॉवर स्टेशन और 400 के.व्ही. जुलवानिया से सीधे जोड़कर निमाड़ क्षेत्र की पारेषण प्रणाली को और अधिक सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बनाया है। श्री तोमर ने बताया कि एम.पी. ट्रांसको ने सिंगाजी थर्मल पॉवर स्टेशन से जुलवानिया जाने वाली 400 के.व्ही. ट्रांसमिशन लाइन को लाइन इन-लाइन आउट तकनीक के माध्यम से छैगांव में जोड़ा है। इससे छैगांव को निमाड़ क्षेत्र के एक प्रमुख लोड सेंटर के रूप में विकसित किया जायेगा। पूर्व में छैगांव सब-स्टेशन को जुलवानिया के माध्यम से ही सिंगाजी थर्मल पॉवर स्टेशन से विद्युत प्राप्त होती थी। अब सीधे जुड़ाव से विद्युत आपूर्ति में लचीलापन और मजबूती आयेगी। इस नई व्यवस्था पर लगभग 10 करोड़ 65 लाख रुपये की लागत आई है। ऊर्जा मंत्री ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए एम.पी. ट्रांसको को बधाई दी है। छैगांव को निमाड़ क्षेत्र का मुख्य लोड सेंटर बनाने में एम.पी. ट्रांसको मुख्यालय, जबलपुर में पदस्थ कार्यपालन अभियंता श्री हितेश तिवारी की ट्रांसमिशन सिस्टम पर किये गये गहन अध्ययन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्री तिवारी ने केवल ट्रांसमिशन सिस्टम की स्टडी की, बल्कि योजना -निर्माण व लागत आंकलन (एस्टिमेट) तैयार करने में भी सक्रिय योगदान दिया। उनके प्रयासों से यह परियोजना सफल हो सकी। श्री तिवारी ने बताया कि सिंगाजी थर्मल पॉवर स्टेशन से सीधे विद्युत आपूर्ति मिलने से निमाड़ क्षेत्र के 220 के.व्ही. सबस्टेशन निमरानी, नेपानगर तथा 132 के.व्ही. के एरिंगेशन फीडर डोंगरगांव से जुड़े उपभोक्ताओं को लाभ मिलेगा। साथ ही छैगांव सब-स्टेशन को वैकल्पिक 400 के.व्ही. आपूर्ति भी उपलब्ध होगी, जिससे आपूर्ति और अधिक स्थिर और विश्वसनीय होगी।

मनीषा की कहानी-जब एक किशोरी ने खुद चुना अपना भविष्य

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। बापू नगर में रहने वाली 15 साल की मनीषा (बदला हुआ नाम) की शादी की तैयारियां शुरू हो चुकी थीं। उसके माता-पिता चाहते थे कि वह अब विवाह के बंधन में बंध जाए, क्योंकि उनकी नजर में यही सही समय था। मनीषा भी चुपचाप सब कुछ स्वीकार कर रही थी, जैसे यही उसका भविष्य हो। इसी बीच मुस्कान संस्था और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा बापू नगर में बाल विवाह के मुद्दे पर जागरुकता फैलाने का एक अभियान चलाया गया।

नुक्कड़ नाटक, फिल्में और प्रदर्शनी कलाओं के माध्यम से बालिकाओं के अधिकार, कानून और उनके सपनों की अहमियत को उजागर किया गया। इस अभियान का प्रभाव पूरे समुदाय में देखने को मिला। बस्ती में लगभग 5 से 6 बाल विवाहों को रोका गया और मनीषा भी उनमें से एक थी। इन गतिविधियों के दौरान मनीषा को अलग-अलग जगहों पर एक्सपोजर विजिट्स पर ले जाया गया, जहां उसने अन्य लड़कियों को पढ़ते, काम करते और आत्मनिर्भर बनते देखा। इन अनुभवों ने मनीषा की सोच को बदला। उसने खुद अपनी शादी रोकने का निर्णय लिया।

कलेक्टर आज करेंगी जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले भर में 30 मार्च से जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल एक मई को जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा करेंगी। बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सुबह 11 बजे आरंभ होगी। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जनपद के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा मुख्य नगर पालिका अधिकारियों एवं संबंधित विभाग के अधिकारियों को अद्यतन जानकारी के साथ बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

जिला नजूल निर्वर्तन समिति की बैठक आज

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर मऊगंज संजय कुमार जैन की अध्यक्षता में जिला नजूल निर्वर्तन समिति की बैठक एक मई को कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित की गई है। बैठक में शासकीय नजूल भूमि आवंटन संबंधी प्रकरणों का निराकरण किया जायेगा।

समाधान आनलाइन कार्यक्रम दो मई को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव दो मई को शाम चार बजे से वीडियो कान्फ्रेंसिंग से आयोजित समाधान आनलाइन कार्यक्रम में निर्धारित एजेण्डा बिन्दुओं की समीक्षा करेंगे। बैठक में समाधान आनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की जाएगी। बैठक में पीएमश्री एयर एंबुलेंस सेवा तथा निवेश संवर्धन केन्द्र की भी समीक्षा की जाएगी। सभी संबंधित अधिकारियों को कमिश्नर कार्यालय और कलेक्टर कार्यालय के एनआईसी केन्द्र से वीडियो कान्फ्रेंसिंग में उपस्थित रहने का अनुरोध किया गया है।

समर्थन मूल्य पर 56551.48 टन हुई गेंहू की खरीद

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। किसानों को उनकी उपज का अधिकतम मूल्य देने के लिए निर्धारित समर्थन मूल्य पर पंजीकृत किसानों से गेंहू का उपार्जन किया जा रहा है। अब तक 10364 किसानों से 56551.48 मीट्रिक टन गेंहू का उपार्जन किया गया है। गेंहू उपार्जन की अंतिम तिथि 5 मई है। इस संबंध में जिला आपूर्ति अधिकारी कमलेश तांडेकर ने बताया कि उपार्जित गेंहू में से 27404 टन गेंहू का परिवहन करके सुरक्षित भण्डारण कराया जा चुका है। अब तक किसानों को 137 करोड़ 14 लाख रुपए की राशि स्वीकृत की गई है। गेंहू उपार्जन के लिए अब तक 17001 किसानों ने स्लॉट बुक किए हैं। उपार्जन के लिए सभी खरीदी केन्द्रों में पर्याप्त मात्रा में बारदाने उपलब्ध करा दिए गए हैं।

विंध्य क्षेत्र में स्वास्थ्य अधोसंरचना के सुदृढीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

संस्कृति और मर्यादाओं के रक्षक भगवान परशुराम प्राकट्योत्सव पर हुये आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि है, आज के दिन किए गए दान पूर्ण शुभ कर्मों का फल अक्षय होता है इसलिए इसे अक्षय तृतीया भी कहते हैं। आज के ही दिन ऋषि जमदग्नि व माँ रेणुका नंदन परशुराम भगवान का दिव्य जन्म हुआ था, इसीलिए सोसल मिडिया से लेकर धर्मस्थलों तक जय परशुराम! जय परशुराम! के नारे लग रहे हैं और यज्ञ, पूजन तथा भंडारे हो रहे हैं। यह सब सुनकर देखकर काफी गौरवान्वित हूँ और तबीयत गदगद हो रही है कि, हम अपने संस्कृत के प्रति कितने सजग हैं! और महापुरुषों को बड़ी दिव्यता, भव्यता के साथ याद कर रहे हैं।

हो भी क्यों न उनके जैसे शिव भक्त, पितृ भक्त, धर्म रक्षक, संघर्षी व तपस्वी युग पुरुष हमारे वांग्मय में बहुत कम हैं। पर आज कुछ लोगों के द्वारा अतिशयोक्ति वश उन्हें 21 बार क्षत्रियों के संहारक के रूप में घोषित किया जा रहा हैं यह चिंतनीय है। यह संदेश राजगुरु मनोज अग्निहोत्री ने भगवान परशुराम जन्मोत्सव के अवसर पर दिए।

उन्होंने कहा कि भगवान परशुराम समाजिक वितंडावाद के विरोध में समाज के आततायियों से भिड़ गए थे।अंततः समाज को शुद्ध रूप देकर ही दम लिए। यह संदेश देना अच्छी बात है पर अतिशयोक्ति वश यह कह देना कि उन्होंने इस पृथ्वी से निज वैर वश 21 बार क्षत्रियों का विनाश किया यह अपचनीय है। एक तो वैसे ही सनातन व्यवस्था फूट के महासागर में डूब रही है, दूसरे ब्राह्मण कुल अवतारी से क्षत्रियों को इस प्रकार 21 बार संहारित करवाना कहीं न कहीं हमारी सनातन वर्ण-व्यवस्था में भेद को अंकुरित करने वाला हो सकता है, जो ठीक नहीं है। हमें भगवान परशुराम को संस्कृति और मर्यादाओं के रक्षक के रूप में जानना चाहिए। इसी के साथ पूरे समाज को वेद पाठ गुरु ज्ञान भगवान परशुराम के जीवन चरित्र का चिंतन मनन करना चाहिए। जिससे हममें ज्ञान और तेज का विकास हो और हम समाज को संयोजित कर युग धर्म का पालन करते हुए नई दिशा दे सकें।

सर्व ब्राह्मण संगठन ने मनाया परशुराम जयंती

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सर्व ब्राह्मण संगठन जिला सतना के तत्वावधान में वेंकटेश वाटिका में परशुराम जयंती समारोह धूमधाम से मनाया गया सर्वप्रथम प्रातः 8 बजे से वैदिक विधि विधान से भगवान परशुराम की पूजा-अर्चना, आरती करके हवन किया गया। संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन प्रातः 11 बजे से प्रारंभ किया गया जिसमें हजारों की संख्या में सतना जिले के विभिन्न अलग-अलग ग्रामीण व शहरी क्षेत्र से विप्र बन्धुओं की उपस्थिति रही! मनोज दुबे अकेला ने विज्ञप्ति में बताया कि संगोष्ठी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सर्व ब्राह्मण संगठन संरक्षक ब्रह्म शिरोमणि पं. कमलाकर चतुर्वेदी एवं अध्यक्षता शिक्षाविद समाजसेवी डॉ सत्येंद्र शर्मा ने किया विशिष्ट अतिथि के रूप में बालकृष्ण शुक्ला बेटा , महेंद्र पांडे पार्षद , महेश तिवारी, और पूजा धर्मेश चतुर्वेदी मंचासीन रहे ! कार्यक्रम का संचालन रमाशंकर और अनिल शर्मा ने किया !

उत्कृष्ट कार्य हेतु इन्हे किया गया सम्मानितः सर्व ब्राह्मण संगठन के नव नियुक्त ऊर्जावान जिला अध्यक्ष रत्नाकर चतुर्वेदी "शिवा" के प्रतिनिधित्व में सतना जिले के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया जिसमें चिकित्सा क्षेत्र से डॉ सौम्या तिवारी, हरिओम पांडे, अंजलि पयासी, योग शिक्षा क्षेत्र से योगिनी ब्रिगेड की डॉ भारती पांडे, इसरो संस्था में कार्यरत वैज्ञानिक ओम पांडे, उद्यमी और समाज सेविका मोनिका अवस्थी को श्रीफल शाल और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया ! संगोष्ठी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित बंधुओ ने अनेक विषयों पर अपने विचार रखें ! कार्यक्रम के मुख्य अतिथि शिक्षाविद् डॉक्टर सत्येंद्र शर्मा ने उद्बोधन देते हुए कहा कि आदिकाल से समाज वर्णश्रम व्यवस्था पर ही चलता आ रहा है परंतु वर्तमान समय में वर्ण आश्रम व्यवस्था के तहत न्याय संगत व्यवहार सरकार द्वारा नहीं किया जा रहा है , जिसके चलते विशेष वर्ग अनेक अधिकारों से वंचित है ! शर्मा जी ने कहा वास्तव में समाज को शिक्षित और विकसित करने की दिशा में ब्राह्मणों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है । उन्होंने कहा कि शास्त्र शास्त्र के अतिरिक्त अब ब्राह्मण समाज को एकता के सूत्र में पिरोना अत्यंत आवश्यक है कार्यक्रम की अध्यक्षता करें पंडित कमलाकर चतुर्वेदी ने सर्व ब्राह्मण संगठन की स्थापना से लेकर वर्तमान समय तक किए गए समाजिक कल्याण कारी कार्यों के बारे में विस्तार से बताया और उन्होंने नौजवान युवा साथियों को समाज हित में कार्य करने के लिए आगे बढ़कर संगठन से जुड़कर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। सर्व ब्राह्मण समाज के जिला अध्यक्ष पं रत्नाकर चतुर्वेदी शिवा ने मंच के माध्यम से जिले के विप्र युवा साथियों से आह्वान किया गया है कि सर्व ब्राह्मण संगठन द्वारा समाज कल्याण के लिए विभिन्न प्रकार की प्रकल्प ,योजनाओं का संचालन किया जाएगा सभी संगठन से जुड़कर समाज कल्याणकारी कार्य में बढ़ चढ़कर करके भाग ले ! परशुराम जयंती कार्यक्रम के इस अवसर पर प्रमुख रूप से क प्यासी दिनेश तिवारी दिनेश त्रिपाठी राम निरंजन पांडे रम्मानी द्विवेदी के के त्रिपाठी विप्र चतुर्वेदी आयुषी तिवारी प्रॉमिस त्रिपाठी मनोज दुबे अकेला पूर्व पार्षद नीरज शुक्ला रमाशंकर मिश्रा अनिल शर्मा प्रमिश त्रिपाठी, हिमांशु पटनहा, संजय उर्मालिया , भोलू त्रिपाठी, प्रिंस करसरा, मंजू चतुर्वेदी,अतुल शुक्ला, विकाश मिश्रा,अवनीश शर्मा,शनि द्विवेदी राम निरंजन पांडे, सौरव त्रिपाठी, सहित जिले के कोने कोने से आए सभी विप्र जन उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय स्तरीय त्रि-दिवसीय सी आर ई कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। राजरानी सेवा एवं शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान एवं सोशल वेलफेयर सोसाइटी में राष्ट्रीय स्तरीय त्रिदिवसीय सीआरई कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया ।

सामाजिक न्याय से पधारे हुए विशेषज्ञ डॉ अमर सिंह, रिसोर्स पर्सन एवं कार्यक्रम समन्वयक श्री संजय सिंह गहरवार, श्री अजय सिंह अध्यक्ष श्रीमती मालती सिंह निदेशक के द्वारा किया गया। तीन दिवसीय सतत पुनर्वास प्रशिक्षण कार्यक्रम में विषय दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कौशल और व्यवसायिक प्रशिक्षण का महत्व पर तीन दिनों तक विस्तार से चर्चा होगी। तीन दिवसीय राष्ट्रीय सतत पुनर्वास कार्यक्रम में रिसोर्स पर्सन के रूप में उपस्थित विषय विशेषज्ञों द्वारा आज व्यवसायिक पुनर्वास क्या है ? व्यवसायिक पुनर्वास कैसे काम करता है ? व्यवसायिक पुनर्वास परामर्शदाताओं की क्या भूमिका है ? व्यवसायिक पुनर्वास में प्रमुख सेवाएं क्या है ? व्यवसायिक पुनर्वास से किसे लाभ मिलता है ? व्यवसायिक पुनर्वास का प्रभाव बताया गया , राष्ट्रीय नीति का विवरण दिव्यांगों के लिए राष्ट्रीय नीति इस पर विस्तृत चर्चा की गई कार्यक्रम का मंच संचालन एसएम राज सिंह समावेशी विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती अनीता विश्वकर्मा के द्वारा किया गया , भारतीय पुनर्वास परिषद की सर्कुलर एवं गाइडलाइन के अनुसार सभी पार्टिसिपेंट्स से प्रश्नावली के माध्यम से प्रतिदिन के सियारी कार्यक्रम में प्राप्त ज्ञान एवं अनुभव के आधार पर प्रश्नोत्तरी के माध्यम से मूल्यांकन किया जाता है , राष्ट्रीय स्तर के इस सतत पुनर्वास कार्यक्रम में भारत के विभिन्न राज्यों से आए हुए पार्टिसिपेंट्स को सुबह का नाश्ता दोपहर का भोजन एवं रहने खाने की रात्रि की पूरी व्यवस्था की गई है जिससे बाहर से आए हुए पार्टिसिपेंट्स एवं रिसोर्स पर्सन को किसी प्रकार की समस्या ना हो इसका विशेष ध्यान संस्था द्वारा रखा गया है जिसका कार्यक्रम के समापन के दिन फीडबैक के माध्यम से संस्था द्वारा आंकलन भी किया जाएगा, तीन दिवसीय सतत् पुनर्वास प्रशिक्षण कार्यक्रम में भारत के कई राज्यों से लगभग 200 पार्टिसिपेंट्स एवं रिसोर्स पर्सन आए हुए हैं जिनका नियमित अटेंडेंस एवं अन्य भारतीय पुनर्वास परिषद द्वारा निर्धारित मापदंडों को पूरा किया जाता है जिससे उन्हें भारतीय पुनर्वास परिषद द्वारा निर्धारित प्रतिदिन के 6 पॉइंट के हिसाब से 18 छ्रश्व पॉइंट का लाभ प्रदान किया जा सके ,

प्रतीक हिंगड़ ने कॉमर्स विषय में 98% अंक प्राप्त कर जिले का नाम रोशन किया

सतना. इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन बोर्ड द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा में क्रिस्तुकुला हायर सेकेंडरी स्कूल, सतना के होनहार छात्र प्रतीक हिंगड़

ने कॉमर्स विषय में 98 प्रतिशत अंक प्राप्त कर पूरे सतना जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। प्रतीक की इस असाधारण उपलब्धि ने न केवल उनके विद्यालय का नाम रोशन किया है, बल्कि सतना जिले को भी जिले स्तर पर गौरवान्वित किया है। उनकी इस सफलता के पीछे विद्यालय के शिक्षकों का मार्गदर्शन, माता-पिता का आशीर्वाद और स्वयं प्रतीक की कड़ी मेहनत रही है। विद्यालय के प्राचार्य ने प्रतीक को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह उपलब्धि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा है।

नीट यूजी परीक्षा 4 मई को - कलेक्टर ने परीक्षा के संबंध में दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। निर्धारित 13 परीक्षा केन्द्रों में 4 मई, रविवार को एनटीए नीट यूजी की परीक्षा निर्धारित परीक्षा केन्द्रों में आयोजित की जा रही है। परीक्षा सुबह 11 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक आयोजित होगी। परीक्षार्थियों को परीक्षा शुरू होने से एक घंटा पहले परीक्षा केन्द्र पहुंचने के निर्देश दिए गए हैं। इस संबंध में कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कहा है कि नीट यूजी परीक्षा में शामिल होने वाले परीक्षार्थी अपने साथ एनटीए वेबसाइट से डाउनलोड किया गया प्रवेश पत्र, पोस्टकार्ड साइज की एक फोटो तथा पासपोर्ट आकार की दो फोटो अवश्य साथ लाएं। इसके साथ-साथ किसी एक अधिकृत फोटो पहचान पत्र की मूल तथा वैध प्रति लेकर आना आवश्यक है। पारदर्शी बोतल में पानी लेकर आने की अनुमति रहेगी। कलेक्टर ने कहा है कि परीक्षा केन्द्र में जूते पहनने की अनुमति नहीं रहेगी लेकिन कम हील की सैण्डल अथवा चप्पल परीक्षार्थी पहन सकते हैं।

कलेक्टर ने कहा है कि परीक्षा केन्द्र में किसी भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे मोबाइल फोन, ब्लूटूथ, इयरफोन, माइक्रोफोन, पेजर, हीटबैण्ड आदि ले जाना पूरी तरह से प्रतिबंधित रहेगा। चश्मा, घड़ी, बेल्ट, कैप, हैण्डबैग, कैमरा, ब्रोसलेट तथा किसी भी तरह के खाद्य पदार्थ का ले जाना भी प्रतिबंधित रहेगा। अपारदर्शी बोतल में पानी ले जाने की अनुमति नहीं रहेगी।

परीक्षार्थी हल्के कपड़े पहनें जिनकी आस्तीन लंबी न हों। फैंसी पाकेट, जिपर, बैज आदि लगा न हो। छात्राएं किसी भी तरह के गहने अथवा धातु की बनी वस्तुओं को न पहनें। फैंसी और कढ़ाईदार कपड़े भी न पहनें। परीक्षा में शामिल होने के लिए निर्धारित निर्देशों का पूरी तरह से पालन करें। परीक्षा के संबंध में सोशल मीडिया अथवा अन्य माध्यमों से फैलने वाली तथ्यहीन सूचनाओं और अफवाहों पर ध्यान न दें। अफवाहों की तत्काल पुलिस कंट्रोल रूम को सूचना दें। नीट यूजी परीक्षा में अनुचित साधनों और अपराधों के लिए पब्लिक एग्जामिनेशन अधिनियम 2024 के तहत प्रकरण दर्ज कर कार्यवाही की जाएगी।

जल गंगा संवर्धन अभियान में लगातार हो रहा पानी को सहेजने का प्रयास

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा और मऊगंज जिले में 30 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पानी को सहेजने के लिए जल संरक्षण से जुड़े निर्माण कार्य बड़े पैमाने पर किये जा रहे हैं। नगरीय निकायों में हैण्डपंपों मे रिचार्ज पिट बनाने तथा पक्के घरों वाटर हार्वेधस्टग सिस्टम लगाने का कार्य किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में चेक डैम, बोरी बांध खेत तालाब और अमृत सरोबरों का निर्माण किया जा रहा है। इस संबंध में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर ने बताया कि ग्राम पंचायत नीबा में दो खेत तालाबों का निर्माण किया जा रहा है। नगर परिषद मऊगंज में अभियान के तहत मऊकूप की साफ सफाई तथा पेयजल की पाइप लाइन की मरम्मत का कार्य किया गया। नगर परिषद के रानीतालाब तथा सुंदर पुरवा तालाब में साफ सफाई का कार्य किया गया। नगर परिषद डभौरा द्वारा 14 हैण्डपंपों में सुधार कराकर उन्हें चालू कराया गया साथ ही रामजानकी मंदिर के पास नाले एवं लेदरी नदी में साफ सफाई का कार्य कराया गया।

जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने बताया कि जल संरक्षण के वन विभाग में घिनौचीधाम के जल स्त्रोतों की साफ सफाई करायी। इससे वन्य प्राणियों और पशु-पक्षियों को स्वच्छ जल उपलब्ध हो रहा है। हनुमना में भी तीन जल स्त्रोतों का साफ सफाई एवं सुधार का कार्य किया गया। जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत 30 अप्रेल को ग्राम पंचायत अकोरी में मतीदहा नदी में साफ सफाई एवं गहरीकरण का कार्य किया गया। सरपंच अच्छेलाल साकेत, अंशू सिंह तथा जनअभियान परिषद से जुड़ी समितियों के सदस्यों ने श्रमदान करके नदी में बोरी बांध का निर्माण कराया। बांध बन जाने से बड़ी मात्रा में पानी संचित हो गया है। अभियान के तहत औद्योगिक विकास निगम में 12 औद्योगिक इकाईयों में वाटर हार्वेधस्टग सिस्टम का निर्माण कराया है। इससे बारिश के पानी को जमीन में संचित करने में सहायता मिलेगी। इसी तरह जिले भर में जल संरक्षण के लिए लगातार प्रयास किये जा रहे हैं।

मनगवां विधायक ने पेयजल आपूर्ति के कार्य का किया अवलोकन

मीडिया ऑडीटर, लालगांव (निप्र)। पेयजल के घोर संकट को देखते हुए विधायक मनगवॉं 73 इन्जीनियर नरेन्द्र प्रजापति आज स्वयं पहुंचे लालगांव में जल जीवन मिशन एवं जल निगम के अधिकारियों एवं इन्जीनियरों द्वारा निरंतर टेस्टिंग एवं पेयजल आपूर्ति के कार्य का अवलोकन करने के लिए। जहां पहुंचकर लालगांव में चल रहे पूरे कार्य को देखा एवं इन्जीनियरों एवं अधिकारियों को निर्देश दिया कि कोई भी घर पेयजल आपूर्ति से छूटने ना पाये। जल मित्र दीपनारायण पांडेय ने विधायक को लालगांव में चल रहे समूचे कार्य को विस्तृत रूप से अवगत कराया, विधायक इन्जीनियर नरेन्द्र प्रजापति ने ग्राउंड जीरो 0 से ही लोक स्वास्थ्य यांत्रिकीय विभाग के कार्यपालन यंत्री से टंकी की उपलब्धता के बारे में बात की।

इस दौरान लालगांव के वरिष्ठ भाजपा नेता सहित सभी ग्रामवासियों को विधायक ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की इस महत्वाकांक्षी योजना से घर घर जल उपलब्धता की बात कही। साथ ही साथ विधायक मनगवॉं 73 इन्जीनियर नरेन्द्र प्रजापति ने लालगांव के आरोग्यम केन्द्र का भी औचक निरीक्षण किया एवं भर्ती सभी मरीजों का कुशलक्षेम पूंछा एवं नवीन अस्पताल निर्माण जमीन का भी अवलोकन किया।

विधायक देवतालाब में किया वाटरशेड महोत्सव का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। वाटरशेड परियोजना द्वारा ग्राम मिसिरगवां में वाटरशेड महोत्सव का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि विधायक देवतालाब एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री गिरीश गौतम ने वाटरशेड महोत्सव का शुभारंभ करते हुए कहा कि पानी सबके जीवन का आधार है। वाटरशेड मिशन के तहत धरती माता की कोख को जल से भरने के लिए जल संरक्षण के कार्य करायें। पानी का किसी भी तरह से दुरूपयोग न करें। फसलों में आवश्यकता के अनुसार पानी दें। सिंचाई के लिए धस्प्रकलर सिस्टम का उपयोग करें। बारिश के पानी को संरक्षित करने के लिए तालाब, चेक डैम्प, स्टाप डैंम, पर्कुलेशन टैंक तथा अन्य जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण करायें। जल संरक्षण को आमजन का अभियान बनाये।

वाटरशेड महोत्सव में मुख्य अतिथि सहित सभी अतिथियों तथा आमजनता ने जल संरक्षण के लिए भूमिपूजन किया। समारोह में विधायक देवतालाब ने वाटरशेड परियोजना के विकास कार्यों का भूमिपूजन तथा लोकार्पण किया। समारोह में वाटरशेड यात्रा के तहत आयोजित जन जागरूकता की विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि ने जल योद्धाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। मुख्य अतिथि ने जन जागरूकता रथ को हरी झण्डी दिखाकर पंचायतों में भ्रमण के लिए रवाना किया। समारोह में जिला पंचायत सदस्य श्री देवेन्द्र शुक्ला, जनपद अध्यक्ष मऊगंज श्रीमती नीलम इन्द्रपाल सिंह, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री महेताब सिंह गुर्जर, जिला परियोजना अधिकारी वाटरशेड डॉ. संजय सिंह, सीईओ जनपद मऊगंज रामकुशल मिश्रा तथा बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

भारतीय संविधान में वेद और पुराणों की मूल भावना समाहित है

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जन अभियान परिषद द्वारा मऊगंज जिले के हनुमना में डॉ. अम्बेडकर के विचार और दर्शन पर आधारित संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक मऊगंज श्री प्रदीप पटेल ने संगोष्ठी का शुभारंभ किया। इस अवसर पर विधायक श्री पटेल ने कहा कि भारतीय संविधान में वेद और पुराणों की मूल भावनाएं समाहित हैं। संविधान का निर्माण करने में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही। बाबा साहब सही अर्थों में महिलाओं और कमजोर वर्ग के सबसे बड़े शुभ चिंतक थे। बाबा साहब के विचारों और प्रयासों से ही भारतीय संविधान में महिलाओं को समानता और सम्मान का अधिकार मिला है। भारतीय संविधान में प्राचीन परंपराओं और वेद पुराणों की मूल भावना को समाहित करने का श्रेय भी बाबा साहब को ही है।

कार्यक्रम में जन अभियान परिषद के संभागीय समन्वयक प्रवीण पाठक ने कार्यक्रम के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए कहा कि जन अभियान परिषद द्वारा प्रदेश के सभी विकासखण्डों में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के कृतित्व और व्यक्तित्व पर संगोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इनके माध्यम से बाबा साहब के विचारों और दर्शन को आमजनता तक पहुंचाया जा रहा है। संविधान की मूल भावना को समझने के लिए हमें डॉ. अम्बेडकर के विचारों को जानना आवश्यक है। संगोष्ठी में नगर परिषद अध्यक्ष हनुमना तथा जनपद सदस्य श्री गुड्डू सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में विकासखण्ड समन्वयक डॉ. रामानंद पटेल, अजय चतुर्वेदी, नवांकुर संस्थाओं और प्रेस्फुटन समिति के अधिकारी तथा आमजन उपस्थित रहे।

विचार

फर्जी दस्तावेजों के सहारे सरकारी खजाने को अरबों का नुकसान

केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय की टीम ने मध्य प्रदेश के शराब कारोबारियों से जुड़े हुए फर्जीवाडे को लेकर 11 शराब कारोबारी के 18 ठिकानों पर छापेमारी की है। इस छापामारी में 49 करोड़ 42 लाख रुपए की धोखाधड़ी और सरकारी खजाने मे और वह रुपए की डकैती डालने का मामला सामने आया है। ईडी ने मनी लॉड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत कार्रवाई की है। जांच एजेंसी को छापे के दौरान कई ऐसे दस्तावेज और जानकारियां प्राप्त हुई हैं, जिससे करोड़ों-अरबों रुपए का किया गया घोटाला मध्य प्रदेश में उजागर हुआ है। मध्य प्रदेश में 2015-16 मे पहली बार यह मामला उजागर हुआ था। उस समय इस मामले को दबा दिया गया था। हाल ही में ईडी की टीम ने जब छापा मारकर जांच शुरू की। उसके बाद एक के बाद एक नए फर्जीवाड़े की परतें खुलकर सामने आनी शुरु हो गई हैं। 2015-16 से 2017-18 के बीच चालानो में फर्जीवाडा किया गया। जिससे सरकार को अरबो रुपए का नुकसान उठाना पड़ा। बैंक गारंटी के रूप में फर्जी गारंटी प्रस्तुत की गई। शराब कारोबारियों द्वारा दस्तावेजों में हेराफेरी करके करोड़ों रुपए का नुकसान सरकारी खजाने को पहुंचाया गया। सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों की मिलीभगत से शराब कारोबारी फर्जीवाड़ा कर रहे थे। इस लूट में सभी शामिल थे। जब मामला सामने आया, तब तत्कालीन आबकारी मंत्री की भूमिका संदेहासप्रद रही। आबकारी विभाग के जिस अधिकारी संजीव दुबे की सरपरस्ती में आबकारी विभाग में करोड़ों रुपए के घोटाले हुए थे, 2017 में उसकी एफआईआर दर्ज हुई। क्योंकि इस लूट में आबकारी विभाग के महत्वपूर्ण पदों में बैठे लोग शामिल थे अत- मामले को दबा दिया गया। जब यह मामला उजागर हुआ, तब शराब ठेकेदारों ने 22 करोड़ रुपए सरकार के खाते में जमाकर मामले को दबबा दिया था। इस मामले को दबाने मे आबकारी विभाग के अधिकारी और तत्कालीन मंत्री की भूमिका थी। उस समय सभी जिम्मेदार पदों पर बैठे हुए पदाधिकारियों ने इस लूट में अपना-अपना हिस्सा वसूल किया था। 2017 से यह मामला ईडी के पास लंबित पड़ा हुआ था। केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों द्वारा बार-बार जानकारी मांगी गई। उसके बाद भी आबकारी विभाग द्वारा ईडी को समय पर जानकारी नहीं दी जा रही थी। ईडी ने शराब कारोबार से जुडे ठेकेदारों और अधिकारियों की जांच अपने स्तर पर कर 18 ठिकानों पर छापेमारी की है। अभी तक लगभग 50 करोड़ रुपए के सरकारी राजस्व को नुकसान पहुंचाने वाले दस्तावेजों को ईडी ने जप्त किया है। इस मामले की जिस तरह से ईडी जांच कर रही है, उससे अरबो रुपए की धोखाधड़ी के नए मामले उजागर होने की संभावना ईडी के अधिकारियों ने व्यक्त की है। शराब कारोबारियों और आबकारी विभाग के अधिकारियों तथा राजनेताओं की मिली भगत से बड़े पैमाने पर अरबों रुपए के घोटाले हर राज्य में हो रहे हैं।

किसान उत्पादक संगठन का बढ़ता कारवां

साल 2014 के आम चुनावों के वक्त प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई वाली भारतीय जनता पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में साल 2022 तक भारतीय किसानों की आय दोगुना करने का वादा किया था। भारतीय कृषि की चुनौतियों को देखते हुए इस लक्ष्य को हासिल करना आसान नहीं। भारतीय किसान मेहनत तो खूब करता है, लेकिन आधुनिकीकरण की कमी, मांग और स्थान के लिहाज से व्यवस्थित आपूर्ति प्रबंधन की कमी और कृषि जोत में लगातार कमी के चलते उसे उसके परिश्रम का वाजिब फल नहीं मिल पाता। इन्हीं समस्याओं को देखते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने किसान उत्पादक संगठन की परिकल्पना की, इसके अंग्रेजी शर्दों के पहले अक्षर के नाम पर इसे एफपीओ के नाम से भी जाना जाता है। इस परिकल्पना को प्रधानमंत्री मोदी ने 29 फरवरी 2020 को मूर्त रूप दिया। इस योजना की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसे लागू होने के ठीक पांच साल बाद यानी 24 फरवरी 2025 को बिहार के भागलपुर में प्रधानमंत्री ने दस हजारवें एफपीओ की शुरूआत की। बिहार के खगड़िया जिले में पंजीकृत इस एफपीओ का मकसद मक्का, केला और धान की फसल के उत्पादन और उसके विपणन पर है।

बहरहाल एफपीओ योजना के तहत साल 2027-28 तक के लिए सरकार ने छह हजार 865 करोड़ रूपए का प्रावधान किया है। इनकी मदद से एफपीओ को वित्तीय संसाधन मुहैया हुआ। इककी वजह से आज एफपीओ ना सिर्फ किसान संगठन हैं, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने और छोटे किसानों को अहम बाजार लाभ, मोल-भाव की ताकत और बाजार तक पहुंच में सुधार की दिशा में सीधी पहुंच मुहैया कराने वाला मंच बन चुका है। इस मंच ने किसानों को सामूहिक सौदेबाजी की ताकत दी है। अब तक के उपलब्ध आंकड़ों के हिसाब से देखें तो देश के पंजीकृत एफपीओ में करीब 30 लाख किसान सीधे जुड़े हुए हैं। जिनमें करीब 40 प्रतिशत महिलाएं हैं। सरकारी समर्थन, बाजार तक सीधी पहुंच और सहकारी प्रयास की वजह से ये एफपीओ कृषि क्षेत्र में अब हजारों करोड़ रुपये का ना सिर्फ सीधे कारोबार कर रहे हैं, बल्कि किसानों की समृद्धि बढ़ाने में भी सहयोगी बने हुए हैं।

सबसे पहले जानते हैं कि किसान उत्पादक संगठन यानी एफपीओ क्या हैं? एफपीओ दरअसल कंपनी अधिनियम के चौदहवें भाग के खंड ए के तहत सहकारी समिति अधिनियम के तहत पंजीकृत किसान-उत्पादक संगठन हैं। खेती-किसानी और उससे जुड़ी गतिविधियों और उत्पादन के साथ ही विपणन से फायदा उठाने की कोशिश के तहत इन संगठनों को खड़ा किया गया है। एफपीओ के सदस्य किसान होते हैं, इस लिहाज से कह सकते है कि एफपीओ एक तरह से किसान-सदस्यों द्वारा नियंत्रित उनका अपना स्वैच्छिक संगठन है। इसके सदस्य इसकी नीतियों के निर्माण और उन पर फैसला लेने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इनकी सदस्यता के लिए लिंग, समाज, नस्ल, राजनीतिक या धार्मिक विचार आदि का ध्यान नहीं रखा जाता। इन सदस्यता उन सभी लोगों को मिल सकती है, जो इसकी सेवाओं का उपयोग तो कर ही सकते हैं, सदस्यता की ज़िम्मेदारी को स्वीकार कर सकते हैं। एफपीओ के संचालक अपने किसान-सदस्यों, निर्वाचित प्रतिनिधियों, प्रबंधकों एवं कर्मचारियों को जरूरी शिक्षा और प्रशिक्षण मुहैया कराते हैं, ताकि वे अपने संगठन के विकास में प्रभावी भूमिका निभा सकें। सहकारी आंदोलन प्रभावी राज्यों मसलन, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि में इन्होंने बेहद उत्साहजनक नतीजे दिखाए हैं।

इस आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी जबरदस्त तरीके से बढ़ रही है। साल 2024 के आंकड़े के अनुसार, इस साल तक रजिस्टर्ड हुए 810 एफपीओ ऐसे रहे, जिनकी प्रत्येक सदस्य सिर्फ महिलाएं हैं। बहरहाल एफपीओ के जरिए किसान अपनी उपज के बदले बेहतर कमाई कर पा रहे हैं। राजस्थान के पाली ज़िले की आदिवासी महिलाओं ने एक उत्पादक कंपनी का गठन किया और इसके माध्यम से उन्हें शरीफा/कस्टर्ड एप्पल के उच्च मूल्य प्राप्त हो रहे हैं।

इन संगठनों के गठन के पीछे की अवधारणा बुनियादी रूप से किसानों के कल्याण पर केंद्रित है। इसके जरिए कृषि उत्पाद तैयार करने वाले किसान अपने लिए समूह बना सकें। शुरू में ही दस हजार संगठनों के गठन का असल मकसद, स्थायी आमदनी केंद्रित खेती-किसान और उत्पादन को बढ़ावा देना और किसानों की आय बढ़ाना है। इस योजना पर साल 2027-28 तक छह हजार 865 करोड़ रुपए के साथ शुरू किया गया था।

सरकार इस योजना की सफलता को लेकर कितनी संजीदा है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस योजना के तहत गठित हर नए एफपीओ को पांच साल तक हैंडहोल्डिंग समर्थन के साथ ही उन्हें तीन साल तक प्रबंधन खर्च के लिए 18 लाख रुपये की वित्तीय सहायता दी जा रही है। इसके साथ ही एफपीओ के प्रत्येक सदस्य किसान को दो हजार रुपए का प्रतिभूति अनुदान दिया जाएगा। जिसकी सीमा प्रति एफपीओ 15 लाख रुपये होगी। इसके साथ ही उन्हें संस्थागत ऋण सुनिश्चित करने के लिए हर एफपीओ को दो करोड़ रुपये तक के परियोजना ऋण की गारंटी सुविधा दी जा रही है।

भारतीय किसानों की सबसे बड़ी समस्या उनकी पैदावार को सही जगह और खरीददार तक पहुंचाने के लिए व्यवस्थित प्रबंधन की कमी है। इसके साथ ही भारतीय खेती की जोत लगातार कम होती चली गई है। देश में औसत जोत का आकार साल 1970-71 में जहां 2.3 हेक्टेयर था, वह साल 2015-16 में घटकर महज 1.08 हेक्टेयर रह गया। इसी तरह खेती में छोटे और सीमांत किसानों की हिस्सेदारी साल 1980-81 के 70 प्रतिशत की तुलना बढ़कर साल 2015-16 में 86 फीसद हो गई। दरअसल घटती जोत और बढ़ती किसान हिस्सेदारी के चलते किसानों की आय या तो बढ़ नहीं रही या फिर घट रही हैं। ऐसे में एफपीओ किसानों के लिए बरदान बन कर सामने आए हैं। अब एफपीओ खेती की उपज, उनके बेहतर विपणन और सही जगह पर पहुंच के साथ ही खेती में नवाचार और विकास की दिशा में सहयोगी रूख अपना रहे हैं। इसका असर है कि एफपीओ के जरिए जहां खेती की उपज बढ़ रही है, वहीं किसान वैकल्पिक उपजों के सहारे अपनी आय को बढ़ा रहा है। एफपीओ छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसानों को खेती के दौरान उन्हें प्रौद्योगिकी, गुणवत्तायुक्त बीज, खाद और कीटनाशकों की पहुंच सुनिश्चित करा रहा है। जहां जरूरत होती है, वहां के लिए जरूरी वित्तीय सहयोग भी एफपीओ किसानों को मुहैया करा रहा हैं। इसके जरिए छोटे, सीमांत और भूमिहीन किसान सामूहिक रूप से संगठित हो रहे हैं। एफपीओ खेती की उपज के प्रबंधन, उसमें तकनीक को बढ़ावा देने में भी सहयोगी और प्रभावी भूमिका निभा रहे हैं।

भारतीय कृषि क्षेत्र में एफपीओ किस तरह अहम भूमिका निभा रहे हैं, इसे समझने के लिए इसे मिलने वाली सहूलियतों की तरफ देखना होगा। एफपीओ को इनपुट जुटाने के लिए कार्यशील पूंजी, विपणन और अपने सदस्य किसानों को बेहतर सेवाएं मुहैया कराने के लिए अनुदान और ऋण दोनों तरह की आर्थिक सहायता दे रहे हैं। एफपीओ को जरूरत पर धन मिल सके, इसके लिए वित्तीय संस्थानों से ऋण के मद में केंद्रीय योजना के तहत ऋण गारंटी निधि का प्रावधान किया गया है। इसके साथ ही देश भर के उपभोक्ताओं को ऑनलाइन उपज बेचने के लिए आठ हजार पंजीकृत किसान उत्पादक संगठनों में से लगभग पांच हजार को ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स यानी ओएनडीसी पोर्टल पर पंजीकृत किया गया है।

एफपीओ के जरिए किसानों को जहां सामूहिक सौदेबाजी की ताकत बढ़ी है, वहीं उन्हें वित्तीय सहयोग मिल रहा है। इस वित्तीय सहयोग से उन्हें वक्त पर तकनीकी सहयोग, जरूरी खाद और कीटनाशक मिल रहा है। इसके साथ ही उन्हें अपनी उपज को खरीददारों तक सीधे पहुंचाने की भी ताक दी है। इस ताकत के चलते किसानों की समृद्धि बढ़ रही है। उम्मीद की जा रही है कि एफपीओ का कारवां अगर इसी तरह बढ़ता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत के किसान समाज के दूसरे नौकरीपेशा और कारोबारी लोगों की तरह समृद्ध और सहज जीवन जीने के काबिल होंगे। बशर्ते कि एफपीओ का यह कारवां यूं बढ़ता रहे।

न्यायिक नियुक्ति आयोग के खात्मे का दर्द नहीं भूली केंद्र सरकार

सुप्रीम कोर्ट केंद्र सरकार की इस मंशा को भाप गया था। वर्ष 2015 में दिए गए फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने आयोग को असंवैधानिक बताते हुए निरस्त कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि जजों की नियुक्ति में न्यायपालिका की स्वतंत्रता को बनाए रखना महत्वपूर्ण है और न्यायिक आयोग इस स्वतंत्रता को खतरे में डालता है।

राज्यपाल और राष्ट्रपति के बिल रोकने के मामले में सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों से केंद्र सरकार से उत्पन्न टकराहट की जड़ में न्यायिक नियुक्ति आयोग पर दिया गया फैसला है। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों की नियुक्ति को लेकर केंद्र सरकार द्वारा संसद में पारित किए गए न्यायिक नियुक्ति आयोग को निरस्त करते हुए सुप्रीम कोर्ट की कॉलेजियम व्यवस्था को जारी रखा था। इस आयोग के जरिए केंद्र सरकार चाहती थी कि न्यायाधीशों की नियुक्ति में उसकी भी भूमिका होनी चाहिए। अकेले सुप्रीम कोर्ट को यह हक नहीं होना चाहिए कि अपने चहेते न्यायाधीशों की नियुक्ति करे। केंद्र सरकार की न्यायिक आयोग बनाए जाने की मंशा यही थी कि महत्वपूर्ण मुद्दों पर उसके द्वारा चयनित न्यायाधीशों के मौजूद होने से पक्ष में फैसला होने की संभावना रहेगी। न्यायिक आयोग में सुप्रीम कोर्ट न्यायाधीशों के साथ केंद्र सरकार के प्रतिनिधियों का भी प्रावधान किया गया था।

सुप्रीम कोर्ट केंद्र सरकार की इस मंशा को भाप गया था। वर्ष 2015 में दिए गए फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने आयोग को असंवैधानिक बताते हुए निरस्त कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि जजों की नियुक्ति में न्यायपालिका की स्वतंत्रता को बनाए रखना महत्वपूर्ण है और न्यायिक आयोग इस स्वतंत्रता को खतरे में डालता है। इस फैसले पर भी खूब वाद-विवाद हुआ था। न्यायिक आयोग के जरिए केंद्र सरकार पर सुप्रीम कोर्ट में दखलंदाजी करने और इसे राजनीतिक अखाड़ा बनाने की बात कही गई थी। दूसरी तरफ न्यायिक आयोग की पैरवी करने वाले केंद्र सरकार के पैरवीकारों का कहना था कि न्यायाधीशों की नियुक्ति में भाई-भतीजावाद हावी है। आयोग के निरस्त होने का रंज केंद्र सरकार को अभी तक है। इसी वजह से राज्यपाल और राष्ट्रपति के बिल रोकने के मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले से केंद्र सरकार से छत्तीस का आंकड़ा बन गया है। तमिलनाडु बनाम राज्यपाल मामले में सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपाल की तरह राष्ट्रपति के लिए भी दी समय-सीमा बताई है।

सुप्रीम कोर्ट ने फैसले में कहा कि राष्ट्रपति को राज्यपाल द्वारा सुरक्षित रखे गए विधेयकों पर 3 महीने के भीतर फैसला लेना होगा। राज्य राष्ट्रपति की निष्क्रियता के खिलाफ अदालत जा सकते हैं। इस अवधि से अधिक किसी भी देरी के मामले में, उचित कारणों को दर्ज करना होगा और संबंधित राज्य को बताना होगा। राज्यों से

यह भी अपेक्षित है कि वे सहयोगात्मक बनें तथा उठाए जाने वाले प्रश्नों के उत्तर देकर सहयोग प्रदान करें तथा केंद्र सरकार द्वारा दिए गए सुझावों पर शीघ्रता से विचार करें। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के बाद राजनीतिक बवंडर आ गया। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सुप्रीम कोर्ट के एक फ़ैसले को लेकर न्यायपालिका के बारे में सख्त टिप्पणी कर दी। उन्होंने कहा कि अदालतें राष्ट्रपति को आदेश नहीं दे सकतीं। उप राष्ट्रपति ने इसकी ओर इशारा करते हुए कहा कि संविधान का अनुच्छेद 142 एक ऐसा परमाणु मिसाइल बन गया है जो लोकतांत्रिक ताक़तों के खिलाफ न्यायपालिका के पास चौबीसों घंटे मौजूद रहता है। उन्होंने कहा कि देश में ऐसी स्थिति नहीं हो सकती कि आप राष्ट्रपति को निर्देश दें।

सुप्रीम कोर्ट को ये अधिकार किसने दिया है और वो किस आधार पर ऐसा कर सकता है।

गौरतलब है कि संविधान का अनुच्छेद 142 सुप्रीम कोर्ट को ये अधिकार देता है कि वो पूर्ण न्याय करने के लिए कोई भी आदेश, निर्देश या फ़ैसला दे सकता है चाहे वो किसी भी मामले में क्यों न हो। लेकिन उप राष्ट्रपति ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट सिर्फ संविधान की व्याख्या कर सकता है। धनखड़ ने कहा कि हमारे पास ऐसे जज हैं जो अब कानून बनाएंगे, कार्यपालिका का काम करेंगे और एक सुपर संसद की तरह भी काम करेंगे और कोई जिम्मेदारी नहीं लेंगे, क्योंकि इस देश का क़ानून उन पर लागू तो होता नहीं। उप राष्ट्रपति ने हाई कोर्ट के जज यशवंत वर्मा के दिल्ली आवास से कथित तौर पर जले नोट मिलने के बाद भी एफआईआर दर्ज न होने पर सवाल उठाया।

उन्होंने कहा कि ये घटना किसी आम आदमी के घर में होती तो बिजली की गति से कार्रवाई होती। लेकिन यहां तो बैलगाड़ी की रफ़्तार से भी कार्रवाई नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि विधानसभा का चुनाव हो या लोकसभा का हर सांसद, विधायक और उम्मीदवार को अपनी संपत्ति घोषित करनी होती है लेकिन वे (जज) ऐसा कुछ नहीं करते।

इस पर पलटवार करते हुए डीएमके राज्यसभा सांसद तिरुचि शिवा ने कहा कि संविधान की रक्षा करने का अधिकारी होने से किसी व्यक्ति को ये अधिकार नहीं मिल जाता कि वो संसद में पारित विधेयकों को अनिश्चित काल तक रोक कर रख सकता है। सीपीआई नेता डी राजा ने कहा कि लोकतांत्रिक ढांचे को बचाए रखने लिए चेक एंड बैलेंस जरूरी है। संविधान का अनुच्छेद 74(1) यह साफ कहता है कि राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से बंधे हैं। राष्ट्रपति सर्वोच्च संवैधानिक पद पर रहते हुए, ऐसे मामलों में स्वतंत्र विवेक का इस्तेमाल नहीं करते। उन्होंने कहा कि उपराष्ट्रपति की टिप्पणी आरएसएस-भाजपा की ओर से विपक्ष के नेतृत्व वाली राज्य सरकारों को कमज़ोर करने के लिए राज्यपाल की शक्तियों के दुरुपयोग को सही ठहराती है। हाल के वर्षों में ऐसी प्रवृति ख़तरनाक ढंग से बढ़ी है। सीनियर एडवोकेट और राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने कहा कि अगर कार्यपालिका अपना काम नहीं कर रही है, तो न्यायपालिका को हस्तक्षेप करने का पूरा अधिकार है। सिब्बल ने उपराष्ट्रपति के बयानों को राजनीतिक करार देते हुए कहा कि उन्होंने आज तक किसी राज्यसभा सभापति को ऐसे बयान देते नहीं देखा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति केवल नाममात्र की प्रमुख हैं। वे कैबिनेट की सलाह और स्वीकृति पर कार्य करते हैं। उनके पास कोई व्यक्तिगत निर्णय लेने की शक्ति नहीं होती। सिब्बल ने कहा कि अगर कार्यपालिका अपना काम नहीं कर रही है, तो न्यायपालिका को हस्तक्षेप करना चाहिए। ऐसा करना उनका अधिकार है। उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा कि न्यूक्लियर मिसाइल तो नोटबंदी थी, तब किसी को तकलीफ नहीं हुई? दरअसल सत्तारुढ राजनीतिक दलों के राजनीतिक उद्देश्य होते हैं, जब ये संविधान के दायरे में पूरा नहीं होते तब अदालतों से टकराहट की नौबत आती है। इसकी पुनरावृत्ति निश्चित तौर पर लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए घातक है। ऐसे विवादस्पद मुद्दों को सभी पक्षों को मिलबैठ कर निपटाने से ही देश की संवैधानिक विविधता और एकता-अखंडता मजबूत रहेगी।

दशमेश डेवलपर्स के ऑफिस में EOW की दबिश

दस्तावेज खंगाल रहे अफसर, जमीन टुकड़ों में बांटकर 43 करोड़ का किया गया घोटाला

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

भारत माला प्रोजेक्ट गड़बड़ी मामले में ACB-EOW ने बुधवार को तेलीबांधा स्थित दशमेश डेवलपर्स के ऑफिस में दबिश दी। जहां ऑफिस में 5-6 अफसर दस्तावेजों की जांच कर रहे हैं। मुआवजा राशि गड़बड़ी में कई बिल्डर्स की भूमिका रही है। इनमें से दशमेश इन्स्टा वेंचर प्राइवेट लिमिटेड कंपनी का भी नाम है। इससे पहले, 25 अप्रैल को छत्तीसगढ़ के कई जगहों पर छापेमार कार्रवाई की गई थी। करीब 17 से 20 अधिकारियों में SDM, तहसीलदार, पटवारी और राजस्व निरीक्षक समेत राजस्व विभाग के कई अफसरों के यहां जांच की गई थी। इस दौरान रायपुर में दशमेश इन्स्टा वेंचर के दफ्तर को सील किया था। दशमेश इन्स्टा वेंचर प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में भावना कुर्रे और हरमीत सिंह खनूजा डायरेक्टर हैं। भावना अभनपुर के तत्कालीन तहसीलदार शशिकांत कुर्रे की पत्नी हैं। 26 अप्रैल से खनूजा EOW की गिरफ्त में है। वहीं, भारत माला प्रोजेक्ट गड़बड़ी मामले में EOW की टीम ने 4 लोगों को गिरफ्तार किया है। जिसमें उमा तिवारी, केदार तिवारी, विजय जैन और हरमीत खनूजा शामिल है। 26 अप्रैल को सभी को कोर्ट में पेश किया गया। सुनवाई के बाद कोर्ट ने चारों आरोपियों को 1 मई तक पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। EOW के अधिकारी उनसे पैसे गबन मामले में पूछताछ कर रहे हैं। बता दें कि, 25 अप्रैल को EOW ने छत्तीसगढ़ के 17 से 20 अधिकारियों के ठिकाने पर छापेमार कार्रवाई की थी। इनमें स्छरू तहसीलदार, पटवारी और राजस्व निरीक्षक समेत राजस्व विभाग के कई अधिकारी शामिल हैं। इनके ठिकानों पर जांच कर दस्तावेजों को जब्त किया गया था। EOW ने रायपुर, महासमुंद, दुर्ग और बिलासपुर में रेड मारी थी। जिसमें निर्भय कुमार साहू, जितेन्द्र कुमार साहू, दिनेश पटेल, योगेश कुमार देवांगन, शशिकांत कुर्रे, लेखराम देवांगन, लखेश्वर प्रसाद किरण, बसंती धृतलहरे, रोशन लाल वर्मा, हरमीत सिंह खनूजा, उमा तिवारी, विजय जैन, दशमेश इन्ट्रावेंचर प्रा. लि., हृदय लाल गिलहरे और विनय कुमार गांधी के ठिकाने शामिल हैं भारतमाला परियोजना एक राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना हैं, जो भारत सरकार की है। इसके तहत नए राजमार्ग के अलावा उन परियोजनाओं को भी पूरा किया जाएगा जो अब तक अधूरे हैं। इसी के तहत रायपुर से विशाखापट्टनम तक करीब 463 किमी लंबी नई फोरलेन सड़क बनाई जा रही है। भारत-माला प्रोजेक्ट में जमीन अधिग्रहण मामले में 43 करोड़ का घोटाला हुआ है। जमीन को टुकड़ों में बांटकर NHAI को 78 करोड़ का भुगतान दिखाया गया। SDM, पटवारी और भू-माफिया के सिंडिकेट ने बैंक डेट पर दस्तावेज बनाकर घोटाले को अंजाम दिया। कुछ दिनों पहले इस केस में दैनिक भास्कर डिजिटल में खबर छपने के बाद कोरबा डिप्टी कलेक्टर शशिकांत कुर्रे को सस्पेंड किया गया था। इसके पहले जगदलपुर निगम कमिश्नर निर्भय साहू को सस्पेंड किया गया था। शशिकांत और निर्भय पर जांच रिपोर्ट तैयार होने के 6 महीने बाद कार्रवाई हुई थी। निर्भय कुमार साहू सहित 5 अधिकारी-कर्मचारियों पर 43 करोड़ 18 लाख रुपए से अधिक राशि की गड़बड़ी का आरोप है। राजस्व विभाग के मुताबिक, मुआवजा करीब 29.5 करोड़ का होता है। अभनपुर के ग्राम नायकबांधा और उरला में भू-माफिया ने राजस्व अधिकारियों के साथ मिलकर जमीन को छोटे टुकड़ों में काटकर 159 खसरे में बांट दिया। मुआवजा के लिए 80 नए नाम रिकॉर्ड में चढ़ा दिए गए। इससे 559 मीटर जमीन की कीमत करीब 29.5 करोड़ से बढ़कर 78 करोड़ रुपए पहुंच गई।

छत्तीसगढ़ में बिजली कर्मचारियों को मिलेगा 55% डीए

राज्य सरकार ने 2% महंगाई भत्ता बढ़ाया, आदेश जारी

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ स्टेट पावर कंपनी में कार्यरत कर्मचारियों, अधिकारियों और पेंशनर्स का महंगाई भत्ता बढ़ा दिया गया है। अब तक 53% महंगाई भत्ता दिया जा रहा था, जिसे राज्य सरकार ने 2% बढ़ा दिया है इससे अब कंपनी में कार्यरत 18 हजार कर्मचारियों को 55% मिलेगा।नई दरें 1 जनवरी 2025 से प्रभावी मानी जाएंगी। हालांकि, इसका नियमित भुगतान अप्रैल 2025 के वेतन के साथ किया जाएगा। वहीं, जनवरी 2025 से मार्च 2025 तक की बकाया राशि को तीन समान किश्तों में अप्रैल से जून 2025 के बीच भुगतान किया जाएगा। पावर कंपनी के वे अधिकारी/कर्मचारी जो अप्रैल 2025 से जून 2025 के बीच सेवानिवृत्त होंगे, उन्हें एरियर्स की पूरी राशि उनके सेवानिवृत्ति माह तक एकमुश्त दे दी जाएगी। इस निर्णय से कर्मचारियों और पेंशनर्स को महंगाई से राहत मिली है और उनकी मासिक आय में बढ़ोतरी करेगा।

बॉयफ्रेंड से तंग आकर नाबालिग ने लगाई फांसी

घर में लटकता मिला शव, सुसाइड नोट में लिखा- बदनाम करने की धमकी देता था

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बलरामपुर जिले में प्रेमी से तंग आकर एक नाबालिग ने फांसी लगा ली। आत्महत्या से पहले किशोरी ने सुसाइड नोट भी लिखा है जिसके मुताबिक, उसने अपनी मौत के लिए प्रेमी पवन कुमार सिंह 22 को जिम्मेदार बताया है। रामचंद्रपुर थाना क्षेत्र का मामला है।जानकारी के मुताबिक, 26 अप्रैल 2025 को घर में 17 वर्षीय नाबालिग की लटकती लाश मिली। घटना के दौरान परिजन महुआ बिनने गए हुए थे। नाबालिग ने सुसाइड नोट में लिखा कि उसका पवन से अफेयर था वह उससे शादी करना चाहती थी, लेकिन पवन उससे शादी करने से इनकार करता था। पवन ने उसे धमकी दी थी कि वह किसी अन्य युवक के साथ भी शादी नहीं करने देगा। पवन ने उसे बदनाम करने की धमकी दी थी। प्रेमी से लगातार प्रेमी से मिल रही धमकी से किशोरी डरी हुई थी और मानसिक रूप से परेशान थी। एसडीओपी रामानुजगंज बाजी लाल सिंह ने बताया कि रामचंद्रपुर पुलिस ने जांच के बाद आरोपी पवन कुमार सिंह के खिलाफ धारा 108 के तहत अपराध दर्ज किया। पुलिस ने आरोपी पवन कुमार सिंह को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। आरोपी को कोर्ट में पेश कर दिया गया है।

नक्सलियों से शांति वार्ता नहीं करेगी सरकार

गृहमंत्री बोले- आदिवासी मरे तब दर्द नहीं हुआ, वार्ता देश तोड़ने का प्रोपेगेंडा

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ सरकार नक्सलियों से शांति वार्ता के मूड में नहीं है। डिप्टी सीएम और गृहमंत्री विजय शर्मा ने नक्सलियों की शांति वार्ता पर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने इसे देश को खत्म करने वाला प्रोपेगेंडा बताया है। शर्मा बोले कि आखिर यह लोग कौन है, जो शांति वार्ता के लिए अपील कर रहे हैं। गृहमंत्री ने कहा कि, जब छत्तीसगढ़ के आदिवासी मुठभेड़ों में मारे जा रहे थे, तब किसी संगठन ने दर्द नहीं जताया, लेकिन अब जब तेलंगाना के नक्सली घेरे में हैं, तो वार्ता की बातें शुरू हो गई हैं। दाल में जरूर कुछ काला है। नक्सली बताएं उनकी तरफ से कौन बात करेंगे। उन्होंने तेलंगाना सीमा से लगे करेंगुट्टा की पहाड़ियों में जारी एंटी नक्सल ऑपरेशन और शांति वार्ता के प्रस्तावों पर तीखी नाराजगी जाहिर की। गृहमंत्री ने कहा कि, बस्तर में कई बड़ी घटनाएं हुई तब कहां थे। कई बड़े हमले के बाद वार्ता के लिए क्यों नहीं आए। कई ग्रामीण और कई नेता मारे गए तब क्यों नहीं आए। विजय शर्मा ने करेंगुटा पहाड़ी पर 8 दिनों से नक्सल करवाई जारी को लेकर कहा कि, आज तेलंगाना वाले फंस रहे हैं तो पीड़ा हो रही है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी मारे तो पीड़ा नहीं हुई। गृहमंत्री शर्मा ने साफ कहा कि पिछले वर्षों में छत्तीसगढ़ में 400 से ज्यादा नक्सली मारे गए हैं, तब किसी ने बातचीत की पेशकश नहीं की। "तब न तो कोई बुद्धिजीवी सामने आया, न ही कोई सामाजिक संगठन", उन्होंने जोड़ा।

शांति वार्ता का सुझाव देने वाले लोग कौन हैं?

गृहमंत्री ने सवाल उठाया कि, शांति वार्ता की बात करने वाले लोग आखिर हैं कौन? 'कौन हैं ये लोग जो वार्ता का एजेंडा सेट कर रहे हैं? दाल में जरूर कुछ काला है। अगर ये वार्ता की पैरवी कर रहे हैं तो इनकी पृष्ठभूमि और मंशा पर भी सवाल उठेंगे।' उन्होंने यह भी कहा कि नसलियों को पहले यह स्पष्ट करना चाहिए कि उनकी ओर से बातचीत में कौन प्रतिनिधित्व करेगा।

9 दिन से ऑपरेशन जारी, 5 नक्सली ढेर...

छीसगढ़ और तेलंगाना सीमा से लगे बीजापुर ज़िले के करेंगुट्टा की पहाड़ियों में पिछले 9 दिनों से बड़ा एंटी नसल ऑपरेशन चल रहा है। इस ऑपरेशन में सीआरपीएफ, छीसगढ़ ष्ठ त्र, तेलंगाना की ग्रेहाउंड्स समेत पांच राज्यों की फोर्स शामिल हैं। अभी तक 5 नसलियों के मारे जाने की पुष्टि हुई है। इनमें से तीन महिला नसलियों के शव भी बरामद किए जा चुके हैं। ऑपरेशन का नेतृत्व वरिष्ठ स्तर के अफसर कर रहे हैं और टॉप लीडर्स को टारगेट किया जा रहा है।

नसल मुद्दे पर सरकार का सत रुख ...

गृहमंत्री शर्मा के इस बयान से साफ है कि छीसगढ़ सरकार फिलहाल किसी तरह की वार्ता या नरमी के मूड में नहीं है। सरकार का फोकस ऑपरेशन को अंजाम तक पहुंचाने पर है और नसल नेटवर्क को पूरी तरह ध्वस्त करने की कोशिश जारी है। शर्मा ने यह भी इशारा किया कि राज्य सरकार नसल समर्थक संगठनों की भूमिका को लेकर भी सत कार्रवाई कर सकती है।

घायलों की मदद कर रहे राहगीरों को वाहन ने रौंदा

बलौदाबाजार में युवक की मौत,6 घायल,बाइक एक्सीडेंट के घायलों की मदद करते वक्त हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार जिले में रोड एक्सीडेंट में घायलों की मदद करने पहुंचा युवक खुद हादसे का शिकार हो गया। मदद करते वक्त युवक तेज रफ्तार वाहन की चपेट में आ गया और उसकी मौत पर ही मौत हो गई, जबकि 6 लोग बुरी तरह घायल हो गए। यह हादसा पलारी थाना क्षेत्र के ग्राम गिर्रा पुलिया के पास देर रात की है। दरअसल, सलोनी निवासी यशवंत ध्रुव 26 और धनराज ध्रुव बाइक से पलारी से ग्राम जर्वे अपनी भांजी की शादी में शामिल होने जा रहे थे। रात में गिर्रा पुलिया के पास एक अज्ञात वाहन से उनकी बाइक की टक्कर हो गई, जिससे दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर मौजूद राहगीरों ने तुरंत पुलिस को घटना की सूचना दी। जिस पर पलारी थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और घायलों को अस्पताल पहुंचाने के लिए रास्ते से गुजर रही दो गाड़ियों एक माजदा और एक पिकअप को रोका। पुलिस ने चालकों और राहगीरों से मदद मांगी। सोनू चौहान, प्रकाश चक्रधारी 33 और एक पुलिसकर्मी घायलों को उठाने लगे।तभी सामने से तेज गति से आ रही एक गाड़ी ने मदद करने वालों और पुलिसकर्मी को जोरदार टक्कर मार दी। इस हादसे में सोनू चौहान की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि प्रकाश चक्रधारी, पुलिस जवान और अन्य तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। टक्कर मारने के बाद वाहन का चालक फरार हो गया।

कोंडागांव के बड़े केनरा में जंगल बचाने की अनूठी पहल

युवाओं ने बनाई टीम, पौधरोपण से लेकर निगरानी तक की जिम्मेदारी संभाली,पीसीसीएफ ने की तारीफ

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

कोंडागांव जिले का बड़े केनरा गांव पर्यावरण संरक्षण का मॉडल बन गया है। यहां के युवाओं ने जंगलों की रक्षा के लिए एक अभियान शुरू किया है। इस अभियान ने गांव की तस्वीर और लोगों की सोच दोनों को बदल दिया है। गांव के युवाओं ने जंगलों को जीवन का आधार मानते हुए इनकी सुरक्षा का बीड़ा उठाया। सरपंच प्रकाश चुरुगनिया और युवा नेता गणेश मानिकपुरी के नेतृत्व में एक स्वयंसेवी समूह बनाया गया। यह समूह गांव-गांव जाकर पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैला रहा है। समूह ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। बच्चों को पौधों की पहचान सिखाई जा रही है। वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। बायोफेंसिंग, बीज बिखेरने और नमी संरक्षण जैसे वैज्ञानिक तरीके अपनाए गए हैं। अब यह मुहिम पूरे गांव की बन गई है। बुजुर्ग, महिलाएं और बच्चे सभी इसमें शामिल हैं। गांववाले खुद जंगल की निगरानी करते हैं। प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए सक्रिय हैं। छत्तीसगढ़ के प्रधान मुख्य वन संरक्षक अरुण कुमार पांडे ने बड़े केनरा का दौरा किया। उन्होंने युवाओं के इस प्रयास की सराहना की। उनका कहना है कि इस तरह के प्रयास पूरे राज्य में किए जाने चाहिए। इससे पर्यावरण संरक्षण एक जनआंदोलन बन सकता है। छत्तीसगढ़ के प्रधान मुख्य वन संरक्षक अरुण कुमार पांडे खुद इस प्रयास को देखने बड़े केनरा पहुंचे।

छत्तीसगढ़ में महिलाओं ने नकली सोना देकर असली लिया

रायपुर-बिलासपुर में ज्वेलर्स को लगाया चूना, दादाजी बोलकर इमोशनल भी किए

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ में शातिर महिलाओं का एक ठग गिरोह पकड़ाया है। इन महिलाओं ने रायपुर और बिलासपुर में ज्वेलर्स को नकली सोना देकर बदले में असली सोना ले लिया। महिलाएं इतनी शातिर थी कि सौदे के दौरान इन्होंने रायपुर के बुजुर्ग ज्वेलर्स को दादाजी बोलकर इमोशनल भी किया। फिर वारदात के बाद महिलाएं भाग गई। हालांकि बिलासपुर पुलिस ने महिलाओं को दबोच लिया है।बताया जा रहा है कि, महिलाओं ने पहली वारदात 28 अप्रैल को बिलासपुर के कोतवाली थाना क्षेत्र में एक ज्वेलरी दुकान में की। इस वारदात के बाद शाम को महिलाएं रायपुर के उरला आ गई। उरला पुलिस ने बताया कि उरला मेन रोड में शांतिलाल जैन नाम के बुजुर्ग ज्वेलरी दुकान चलाते हैं। शाम करीब 5.30 बजे उनके दुकान पर दो महिलाएं आई। अपने साथ सोने के नेकलेस चेन और पुरानी ज्वेलरी लेकर आई थी। महिलाएं जो ज्वेलरी लेकर आई थी उसका वजन करीब 70 ग्राम था। उन्होंने शांतिलाल को कहा कि इसे एक्सचेंज करवाकर वह नई ज्वेलरी लेना चाहती हैं। शंकर लाल और उसके स्टाफ ने उन्हें गोल्ड ज्वेलरी दिखाया। महिलाओं में सोने का एक हार, एक चेन, दो मंगलसूत्र, तीन जोडी आईरिंग, कुल वजन करीब 47 ग्राम पसंद किया। इसकी कीमत करीब साढ़े 4 लाख रुपए थी। इसके अलावा उन्होंने ज्वेलर्स से वजन के अंतर का करीब 80 हजार रुपए कैश भी ले लिए।

दादाजी बोलकर मोबाइल नंबर भी दिया

इस सौदे के दौरान महिलाओं ने शांतिलाल को दादाजी कहकर संबोधित किया। जिससे उन्हें इमोशनल कर सके। फिर उन्होंने अपनी एक चांदी की पायल भी दुकान पर छोड़ दी और कहा कि इसे कल तौलवाकर बेच देंगे। फिर महिलाओं ने अपना मोबाइल नंबर भी दिया। जो फर्जी था। फिर दोनों महिलाएं दुकान से निकल गई।

ज्वेलरी निकली नकली, सोना केवल 2 प्रतिशत

महिलाओं के जाने के बाद जब शांतिलाल ने ज्वेलरी की केमिकल से जांच की तो वह नकली निकली। हालांकि इसमें केवल दो प्रतिशत ही सोना था। इसके बाद ज्वेलर्स को ठगी का एहसास हुआ। आसपास महिलाओं की तलाश की गई लेकिन वह कहीं नहीं मिली। इसके बाद पूरा मामला पुलिस थाने पहुंचा। फिलहाल रायपुर पुलिस बिलासपुर पुलिस के साथ संपर्क में है। महिलाओं ने बिलासपुर में भी हूबहू इसी पैटर्न में ठगी की है। बिलासपुर पुलिस इस मामले में आज शाम खुलासा करेगी।

मनेंद्रगढ़ में महिला कबड्डी प्रीमियर लीग का फाइनल

बेलकामार ने बंजी को 43-28 से हराकर जीता खिताब, सुमन बनी बेस्ट ऑलराउंडर

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

मनेंद्रगढ़ में अस्मिता सिटी इलेक्ट्रिक महिला प्रीमियर लीग 2025 का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशन और जिला खेल अधिकारी वीरेन्द्र नामदेव के मार्गदर्शन में यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में चार टीमों ने हिस्सा लिया। फाइनल मुकाबला लघु केंद्र बंजी और बेलकामार के बीच खेला गया। बेलकामार ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बंजी को 43-28 से हराकर खिताब जीत लिया। व्यक्तिगत पुरस्कारों में बेलकामार की सुमन को बेस्ट ऑलराउंडर चुना गया। उनकी टीम की पिंकी को बेस्ट रेडर का खिताब मिला। बंजी की प्रीति को बेस्ट डिफेंडर का पुरस्कार दिया गया। जिला पंचायत सदस्य रामजीत लकड़ा मुख्य अतिथि रहे। विशिष्ट अतिथियों में जनपद सदस्य सुरेन्द्र मरकाम, सीता देवी, सरपंच हेमा रघुनाथ, फूलमती और देव कुमार शामिल थे। टूर्नामेंट को सफल बनाने में बंजी आश्रम की अधीक्षिका, प्राचार्य आनन्द, इन्द्रजीत, रूपसिंह और निर्णायक राहुल का योगदान रहा। शिव चौधरी, यशवंत, व्यायाम शिक्षक केमेन्द्र साहू और शिक्षक गौरव ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुख्य अतिथि रामजीत लकड़ा ने कहा कि खेल शारीरिक विकास के साथ मानसिक मजबूती और आत्मविश्वास बढ़ाने में मदद करते हैं। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र की महिला खिलाड़ियों को खेल का मंच प्रदान करना था।

सहकारी समिति डेयरी को प्रशासन ने कराया बंद,दुकान सील

दूध सागर सहकारी समिति के संचालन में 3 करोड़ से अधिक की गड़बड़ी, FIR के निर्देश

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सरगुजा में जिला प्रशासन के सहकारी सेवा समिति के दूध सागर डेयरी में तीन करोड़ रुपए से अधिक की गड़बड़ी पाई गई है। दूध सागर डेयरी का संचालन के लिए बनी समिति साल 2023 में बंद कर दी गई है। इसके बाद अनधिकृत रूप से सीईओ और संचालक इसे चला रहे थे। कलेक्टर ने जांच के बाद मामले में एफआईआर के निर्देश नगर निगम आयुक्त और पशु चिकित्सा विभाग को दिया है। जानकारी के मुताबिक, साल 2017-18 में महिला स्वावलंबन के लिए तत्कालीन कलेक्टर किरण कौशल ने दूध सागर सहकारी सेवा समिति का गठन किया था। समिति को दूध डेयरी के संचालन के लिए स्टेडियम के बगल में दुकान का आबंटन किया गया था। समिति द्वारा लुंड्रा क्षेत्र के गांवों से दूध का संकलन कर अंबिकापुर में बेचा जाता था। इसमें दूध उत्पादकों को लाभांश भी देने का प्रावधान किया गया था। सहकारी समिति के संचालन के लिए लमगांव की बीना कौशिक को अध्यक्ष, बटवाही की रीता यादव को सचिव और तारा पटेल को उपाध्यक्ष बनाया गया था। समिति का सीईओ दीपक सिंह को और दूध बिक्री के लिए मो. शाहीद अंसारी को सहायक रखा गया था। समिति की महिलाओं ने आरोप लगाया कि मो. शाहीद ने अपने साथियों के साथ मिलकर दूध का व्यवसाय समिति की महिलाओं से छीन लिया। दूध की लाभांश राशि में भी गड़बड़ी की गई है। इसकी शिकायत सरगुजा कलेक्टर से की गई थी। मामले की जांच सरगुजा कलेक्टर विलास भोस्कर ने कराई। जांच में पता चला कि महिला समिति वर्ष 2023 से बंद है। इसका संचालन अवैध रूप से नगर निगम के दुकान में किया जा रहा था। लाभांश राशि भी किसानों को भुगतान नहीं किया गया है।जांच रिपोर्ट मिलने के बाद जिला प्रशासन एवं निगम के दुकान में संचालित डेयरी को प्रशासन ने बंद करा दिया है। नगर निगम ने दुकान को आधिपत्य में लेते हुए उसमें ताला जड़ दिया है। मामले में सीईओ दीपक सिंह और संचालक मो. शाहीद अंसारी के खिलाफ एफआईआर के निर्देश कलेक्टर सरगुजा ने पशु चिकित्सा विभाग और नगर निगम को दिया है। सरगुजा कलेक्टर विलास भोस्कर ने बताया कि, समिति के संचालन में अनियमितता की शिकायत पर जांच कराई गई। दूध सागर सहकारी समिति वर्ष 2023 से बंद है। इसके बाद इसका अवैध रूप से संचालन किया जा रहा था। दूध उत्पादक किसानों की राशि में करीब 3 से 4 करोड़ रुपए की गड़बड़ी पाई गई है। निगम आयुक्त और पशु चिकित्सा विभाग को कार्रवाई का निर्देश दिया गया है।

रायगढ़ में बांग्लादेशियों के संदेह पर पुलिस ने की जांच

12 संदिग्ध लोगों पर माइनर एक्ट की कार्रवाई, पश्चिम बंगाल के रहने वाले कई मिले

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिला में पुलिस बाहरी राज्यों से आए लोगों की जांच कर रही है। जहां कल धरमजयगढ़ में पुलिस ने 12 संदिग्ध लोगों पर माइनर एक्ट के तहत कार्रवाई की है। इसके अलावा काफी संख्या में लोग यहां पश्चिम बंगाल से आकर रह रहे हैं। जिसकी भी जांच में पुलिस जुट गई है। कश्मीर के पहलगाम आतंकी हमले के बाद से पुलिस पूरे जिले भर में बांग्लादेशियों और दूसरे राज्यों से आए लोगों की जांच करने में जुटी हुई है। धरमजगयढ़ क्षेत्र के अलग-अलग मोहल्लों में बंगाल की ओर से आकर रहने वाले लोग बसे हुए हैं। हालांकि, इन्हें काफी साल हो गया है, लेकिन पुलिस ने जांच की, तो कुछ संदिग्ध लोग भी मिले। जहां 28 लोगों को थाना लाया गया, जिसमें से 12 ऐसे लोग मिले, जो पश्चिम बंगाल के रहने वाले हैं और धरमजयगढ़ क्षेत्र में काम करने के लिए आकर रह रहे हैं। जो थाना में बिना सूचना दिए ही यहां रह रहे थे। ऐसे में 12 लोगों के खिलाफ पुलिस ने धारा 128 के प्रतिबंधात्मक कार्रवाई कर आगे की जांच में जुट गई है। धरमजयगढ़ थाना क्षेत्र में पुलिस दूसरे राज्यों से आए लोगों की जांच कर रही है। जहां कल धरमजयगढ़ कॉलोनी, बायसी, सागरपुर और वार्ड नंबर 6 में पहुंची, यहां लंबे समय से दूसरे राज्यों से आए लोग रह रहे थे। इसमें अधिकांश लोग पश्चिम बंगाल के रहने वाले मिले। धरमजयगढ़ थाना प्रभारी कमला पुसाम ने बताया कि पुलिस लगातार जांच कर रही है और कल 12 संदिग्ध लोगों के खिलाफ धारा 128 के तहत कार्रवाई की गई है। बांग्लादेशी अभी कोई नहीं मिला है, लेकिन पश्चिम बंगाल की ओर से आकर रहने वाले मिले हैं। सभी से पूछताछ की जा रही है।

पीएम मोदी की अध्यक्षता में महत्वपूर्ण फैसला, पहलगाम आतंकी हमले के बाद सुरक्षा तंत्र मजबूत

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड का नए सिरे से गठन किया है। रिसर्च एंड एनालिसिस विंग के पूर्व प्रमुख रहे आलोक जोशी को इसका नया चेयरमैन बनाया गया है। एनएसएबी में 6 सदस्य भी होंगे। इनमें आर्मी, नेवी और एयरफोर्स के पूर्व अफसर हैं। साथ पूर्व डिप्लोमैट और पूर्व आईपीएस अफसर को भी शामिल किया गया है। सरकार ने ये फैसला पहलगाम आतंकी हमले को देखते हुए लिया है। सीएसएस राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय को इनपुट देगा। पीएम नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को हुई सुरक्षा पर कैबिनेट कमेटी की बैठक में ये फैसला लिया गया। इससे पहले सीएसएस की बैठक पहलगाम हमले के एक दिन बाद यानी 23 अप्रैल को हुई थी। क्या है राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड पहली बार 1998 में गठित किया गया था। इसे लॉन्ग टर्म स्ट्रैटजिक एसेसमेंट का काम दिया गया। ये भी तय किया गया कि एनएसएबी महत्वपूर्ण मुद्दों पर राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद को सलाह देगा। 2018 में बोर्ड का एक बार फिर गठन किया गया। तब भारत के रूस में राजदूत रहे पीएस राघवन को इसका प्रमुख बनाया गया था।

गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट खुले

देहरादून (एजेंसी)। गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट बुधवार को अक्षय तृतीया के दिन श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए। इसके साथ ही करीब 6 महीने तक चलने वाली चार धामयात्रा की विधिवत शुरुआत हो गई। आप दोनों धाम के लाइव दर्शन कर सकते हैं। गंगोत्री में 1 हजार से ज्यादा और यमुनोत्री में 3 हजार से ज्यादा श्रद्धालु पहले दिन दर्शन के लिए पहुंचे हैं। सबसे पहले आज सुबह मां गंगा की डोली मुखबा से गंगोत्री धाम पहुंची। राजपूताना राइफल्स के बैंड की धुनों के बीच गंगा की पूजा-अर्चना की गई। हेलिकॉप्टर से मंदिर पर फूल बरसाए गए। गंगोत्री के बाद यमुनोत्री धाम के कपाट सुबह 11:55 बजे खोले गए। इससे पहले यमुना की उत्सव डोली यमुनोत्री धाम पहुंची। पूजा-अर्चना के बाद यमुनोत्री के कपाट खोले गए। उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने भी गंगोत्री-यमुनोत्री धाम पहुंचकर पूजा-अर्चना की। गंगोत्री-यमुनोत्री के बाद अब 2 मई को केदारनाथ और 4 मई को बद्रीनाथ धाम के कपाट खोले जाएंगे।

कोलकाता के होटल में आग लगी, 15 की मौत

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के फालपट्टी मछुआ इलाके में मंगलवार रात एक होटल में आग लगने से 15 लोगों की मौत और 13 लोग घायल हो गए। आग पर काबू पा लिया गया है। 22 लोगों को बचाया गया। पुलिस के मुताबिक, मरने वालों में 2 महिलाएं और 1 बच्चा शामिल है। वहीं, 12 पुरूष मृतकों में से 8 की पहचान कर ली गई है। पुलिस कमिश्नर मनोज वर्मा ने बताया- आग ऋतुराज होटल में रात करीब 8:15 बजे लगी। सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड और पुलिस की टीमों ने मौके पर पहुंचकर राहत-बचाव का काम शुरू किया।

सामूहिक विवाह सामाजिक सुधार का है महत्वपूर्ण कदम - मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देश एवं प्रदेशवासियों को परशुराम जयंती की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा श्री महाकाल महालोक कॉरिडोर की सौगात के बाद से उज्जैन ने विकास के नित नए आयाम स्थापित किए हैं।

उज्जैन को धर्म और धार्मिक पर्यटन का मुख्य केन्द्र बनाया जा रहा है। धर्म ही समाज को एक सूत्र में पिरोता है। सामूहिक विवाह का आयोजन सामाजिक सुधार का महत्वपूर्ण कदम है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव दाउदखेड़ी में आयोजित सामूहिक विवाह समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विवाह का आयोजन सामूहिक रूप से करने से मितव्ययता आती है और वैवाहिक कार्यक्रम के लिए अनावश्यक कर्ज का बोझ नहीं पड़ता है। सामूहिक विवाह कार्यक्रम में प्रत्येक वधु को 49 हजार रूपये एवं आयोजनकर्ता निकाय को प्रति कन्या 6 हजार रूपये प्रदान किये जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने त्रिकालदर्शी महामृत्युंजय बाबा श्री महाकाल को दंडवत प्रणाम करते हुए कहा कि अक्षय तृतीया के पुण्य अवसर पर आज प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर सामूहिक विवाह कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि एक समय था जब परिवार की कन्याओं का विवाह कराने के लिए माता-पिता कर्ज में डूब जाया करते थे। बेटी के जन्म के साथ ही उसकी शादी की चिंता सताने लगती थी, लेकिन अब सरकार बेटियों का कन्यादान कर रही है। माता-पिता अब बेटियों के जन्म पर उदास नहीं होते, बधाई गीत गाते हैं।

पाकिस्तान ने इंटरनेशनल बॉर्डर पर चौकियां खाली कीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम हमले के 8 दिन बाद बुधवार को पाकिस्तानी सेना ने इंटरनेशनल बॉर्डर पर कई पोस्ट खाली कर दी हैं। पाकिस्तानी सेना ने इन पोस्ट से झंडे भी हटा लिए हैं। कठुआ के पर्गवाल इलाके में ये पोस्ट खाली की गई हैं। पाकिस्तानी सेना एलओसी पर लगातार सीजफायर वॉयलेशन कर रही है। पाकिस्तानी सेना ने बुधवार को पहली बार इंटरनेशनल बॉर्डर पर भी सीजफायर तोड़ा। जिसका भारतीय सेना ने तुरंत जवाब दिया। भारत और पाकिस्तान के मिलिट्री ऑपरेशन के महानिदेशकों ने हॉटलाइन पर बातचीत की और पाकिस्तान द्वारा बिना उकसावे के संघर्ष विराम उल्लंघन पर चर्चा की। भारत ने नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तानी सेना द्वारा बिना उकसावे के किए जा रहे संघर्ष विराम उल्लंघन के खिलाफ पाकिस्तान को चेतावनी दी। इस बीच, केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड का नए सिरे से गठन किया है। पूर्व रॉ चीफ आलोक जोशी को इसका चेयरमैन बनाया गया है। प्रधानमंत्री आवास पर सुरक्षा मामलों की कैबिनेट कमेटी बैठक खत्म हो गई है। सीसीएस की यह दूसरी मीटिंग है, पहली मीटिंग पहलगाम अटैक के अगले दिन 23 अप्रैल को हुई थी। सीसीएस की बैठक के तुरंत बाद कैबिनेट कमेटी ऑन पार्लियामेंट्री अफेयर्स, आर्थिक मामलों की कमेटी और केंद्रीय कैबिनेट की बैठक होगी।

हाईकोर्ट के जज लोकपाल के दायरे में या उससे बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाईकोर्ट के मौजूदा जजों के खिलाफ दर्ज भ्रष्टाचार के मामलों की सुनवाई लोकपाल कर सकता है या नहीं। इसको लेकर आज सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस अभय एस ओक और जस्टिस सूर्यकांत बेंच ने कहा कि, यह औचित्य (कितना सही) से जुड़ा मामला है। सीजेआई से इस पर राय मांगी गई है। अगली सुनवाई जुलाई में होगी। जस्टिस बीआर गवई, अगले सीजेआई हैं। वहीं जस्टिस

ओक भी अगले महीने रिटायर हो रहे हैं। इसलिए कोर्ट ने कहा कि मामले की सुनवाई के लिए नई बेंच बनाई जाएगी। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने लोकपाल के 27 जनवरी के एक आदेश पर एक्शन लिया था। जिसमें कहा गया था कि लोकपाल के पास हाईकोर्ट जज के खिलाफ दर्ज शिकायतें सुनने का अधिकार है। 20 फरवरी को आदेश पर रोक लगा दी गई। तब जस्टिस गवई ने कहा था कि यह बहुत ही परेशान करने वाली बात है। यह पूरा मामला एक हाईकोर्ट के जज और एडीशनल जज के खिलाफ दायर केस से जुड़ा है।

मुंबई पुलिस की कमान संभालेंगे बिहार के देवेन भारती

पटना (एजेंसी)। बिहार के दरभंगा के रहने वाले आईपीएस अधिकारी देवेन भारती मुंबई के नए पुलिस कमिश्नर बनाए गए हैं। वह वर्तमान कमिश्नर विवेक फणसालकर की जगह लेंगे। 35 साल की नौकरी के बाद फणसालकर आज यानी बुधवार को रिटायर हो रहे हैं।

देवेन भारती 1994 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं। इससे पहले वे मुंबई के लॉ एंड ऑर्डर में स्पेशल पुलिस कमिश्नर रहे हैं। उन्हें महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का करीबी माना जाता है। देवेन आज शाम को पद संभालेंगे। 2014 से लेकर 2019 तक फडणवीस के सीएम कार्यकाल के दौरान भारती जॉइंट पुलिस कमिश्नर (लॉ एंड ऑर्डर) के पद पर थे। भारती मुंबई में हुए 26/11 आतंकी हमले की जांच में शामिल थे। पाकिस्तानी आतंकवादी अजमल कसाब को फांसी दिलवाने में उनका अहम रोल रहा।

विवेक फणसालकर के रिटायर होने के बाद चर्चा थी कि पद किसे मिलेगा। वरिष्ठ पुलिस अधिकारी सदानंद दाते, संजय कुमार वर्मा, रितेश कुमार और महिला पुलिस अधिकारी अर्चना त्यागी का नाम भी पुलिस कमिश्नर की रेस में था।

भाजपा प्रवक्ता नरेंद्र सलूजा का आकस्मिक निधन, पार्टी में शोक की लहर

इंदौर (एजेंसी)। बीजेपी के प्रदेश प्रवक्ता नरेंद्र सलूजा का बुधवार को आकस्मिक निधन हो गया। उन्होंने इंदौर स्थित रानीबाग निवास में अंतिम सांस ली। वे दो दिन पहले एक शादी समारोह में शामिल होने के लिए सीहोर पहुंचे थे। जहां उनके सीने में दर्द उठा था। उन्होंने इसे गैस की समस्या समझते हुए गंभीरता से नहीं लिया। दोपहर को शादी से लौटने के बाद रानीबाग स्थित निवास पर दर्द तेज हो गया और वे

बेहोश हो गए। परिजन उन्हें निजी अस्पताल ले गए जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। उनकी आकस्मिक निधन से पार्टी में शोक की लहर है। बता दें कि नरेंद्र सलूजा पहले कांग्रेस में पूर्व सीएम कमलनाथ के मीडिया समन्यक थे।

बता दें कि नरेंद्र सलूजा पहले कांग्रेस में पूर्व सीएम कमलनाथ के मीडिया समन्वयक थे। इंदौर में तीन साल पहले राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा की तैयारी के सिलसिले में पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के साथ वे इंदौर के गुरुद्वारे गए थे। वहां कमलनाथ का विरोध हुआ।

पानी रोकने से हरियाणा में संकट

चंडीगढ़ (एजेंसी)। टोहाना में आता भाखड़ा का पानी, इनसेट में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी और पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान और इनेलो के अध्यक्ष अभय चौटाला। पंजाब की आम आदमी पार्टी सरकार ने भाखड़ा नहर से हरियाणा को मिलने वाले पानी में कटौती कर दी है। साढ़े 8 हजार क्यूसेक की जगह अब सिर्फ 4 हजार क्यूसेक पानी ही दिया जा रहा है। इसको लेकर अब टकराव बढ़ता जा रहा है। पानी का बंटवारा भाखड़ा ब्यास मैनेजमेंट बोर्ड करता है। जिसके बाद बीबीएमपी ने केंद्र सरकार को लेटर लिखा है। यह बोर्ड केंद्रीय बिजली मंत्रालय के अधीन आता है। जिसके मंत्री हरियाणा के पूर्व ष्टरू मनोहर लाल खट्टर हैं। इस लेटर पर फैसला भी वही लेंगे। खट्टर ने इसको लेकर कहा कि पंजाब सरकार राजधर्म नहीं निभा रही। वहीं, आज पंजाब के सीएम भगवंत मान ने हरियाणा के सीएम नायब सैनी को एक लेटर लिखा है, जिसमें उन्होंने बीजेपी पर षड्यंत्र करने का आरोप लगाते हुए कहा- बीजेपी जबरदस्ती पंजाब के पानी पर डाका डालना चाहती है, मैं किसी भी हालत में पंजाब के लोगों के साथ अन्याय नहीं होने दूंगा भाखड़ा नहर में कटौती से हिसार और सिरसा में जलसंकट खड़ा हो गया है। हिसार में टैंकर माफिया एक्टिव हो गए हैं। 400 के टैंकर के 1200 रुपए वसूले जा रहे हैं। इसके अलावा फतेहाबाद में सिंचाई पर रोक लगा दी गई है। जींद में निर्माण कार्य और वाशिंग स्टेशन बंद कर दिए गए हैं। झज्जर में नहरों में नहाने पर रोक लगाने के साथ किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की गई है। पंचकूला में भी कनेक्शन काटने की चेतावनी दी गई है।

विशाखापट्टनम में बारिश से नरसिंह स्वामी मंदिर की दीवार गिरी

विशाखापत्तनम (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में मंगलवार रात श्री वराह लक्ष्मी नरसिंह स्वामी मंदिर की दीवार का 20 फीट लंबा हिस्सा गिर गया। हादसे में 7 लोगों की मौत हो गई और 4 घायल हो गए। मंदिर में चंदनोत्सव चल रहा था। यह हर साल मनाया जाता है। इसमें हजारों श्रद्धालु भगवान नरसिंह के दर्शन के लिए आते हैं। अधिकारियों के मुताबिक, हादसा देर रात 2:30 से 3:00 बजे के बीच तेज बारिश के कारण हुआ। कलेक्टर हरेंद्र प्रसाद ने बताया कि एनडीआरएफ और एसडीआरएफ ने रेस्क्यू पूरा कर लिया है। राज्य की गृह और आपदा प्रबंधन मंत्री वंगलापुड़ी अनिता भी तुरंत घटनास्थल पर पहुंचीं और हालात का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि घायलों के इलाज और राहत-बचाव में कोई कोताही न हो। घटना की जांच के आदेश दे दिए गए हैं। हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शोक व्यक्त किया है।

5 राज्यों में हीटवेव, जैसलमेर में पारा 46.5 डिग्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में हवा का रुख बदलने से इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर फ्लाइट्स की उड़ानों में देरी हो रही है। पिछले दो दिनों में करीब 400 फ्लाइट्स लेट हो चुकी हैं। दरअसल हवाएं पश्चिम की बजाय पूर्व से बह रही हैं।

ऐसी स्थिति में जो फ्लाइट्स ईस्टर्न साइड से ऑपरेट हो रही हैं, उन्हें रनवे के दूसरे छोर से टेक ऑफ करना पड़ता है। ऐसे में विमानों को टैक्सी वे से घूमकर रनवे तक पहुंचना पड़ता है। इसमें समय लगता है और फ्लाइट्स में देरी हो जाती है। एक फ्लाइट में औसत देरी करीब 20 मिनट की होती है। मौसम एक्सपर्ट के मुताबिक, यह स्थिति करीब 4 मई तक रह सकती है। उधर मौसम विभाग ने आज गुजरात, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर और लद्दाख में हीटवेव का अलर्ट जारी किया है।

मणिपुर के 21 विधायकों ने अमित शाह को लेटर लिखा

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद राज्य में शांति की बहाली के लिए, राज्य के 21 विधायकों ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को लेटर लिखा। इसमें लिखा गया कि राज्य में वो सरकार हो जिसका चुनाव जनता करे। लेटर पर 13 भाजपा विधायकों, 3 एनपीपी विधायकों, 3 नगा पीपुल्स फ्रंट विधायकों और विधानसभा के दो सदस्यों ने साइन किए हैं। इसमें कहा गया कि मणिपुर के लोगों ने बहुत उम्मीद और अपेक्षा के साथ

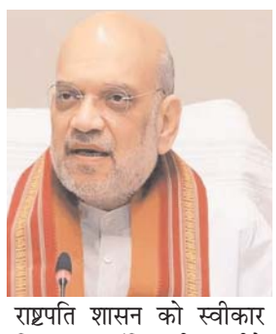

राष्ट्रपति शासन को स्वीकार किया। हालांकि, तीन महीने होने जा रहे हैं, लेकिन अभी तक शांति और सामान्य स्थिति लाने के लिए कोई कार्रवाई नहीं देखी गई है। राज्य के लोगों का मानना है कि हिंसा फिर से हो सकती है। कई नागरिक संगठन राष्ट्रपति शासन लागू करने के खिलाफ खुलकर सामने आए हैं और एक लोकप्रिय सरकार की स्थापना की मांग कर रहे हैं। इन संगठनों ने सार्वजनिक रैलियां, नुक्कड़ सभाएं आयोजित करना, आम जनता को भड़काना, सत्तारूढ़ विधायकों पर लोकप्रिय सरकार बनाने का दावा न करने का आरोप लगाना और राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू करने के लिए जिम्मेदारी तय करना शुरू कर दिया है।

पहलगाम हमले के बाद आयोजन, भारतीय स्टूडेंट्स की अमेरिकी विदेश मंत्री को चिट्ठी

वॉशिंगटन (एजेंसी)। दो भारतीय स्टूडेंट सुरभि तोमर और रश्मिनी कोपरकर ने हार्वर्ड एडमिनिस्ट्रेशन और अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो को लेटर लिखकर इस इवेंट को लेकर आपत्ति दर्ज कराई।। अमेरिका की हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के साउथ एशिया इंस्टीट्यूट में हाल ही में पाकिस्तान कॉन्फ्रेंस हुई। इसमें पाकिस्तान वित्त मंत्री मुहम्मद औरंगजेब और अमेरिका में

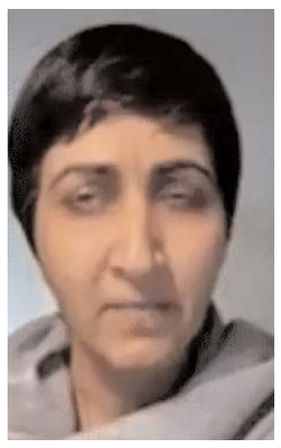

पाकिस्तान के राजदूत रिजवान सईद शेख ने हिस्सा लिया।

यह कार्यक्रम 27 अप्रैल को हुआ था, जिसका आयोजन पाकिस्तानी छात्रों ने किया था। इस इवेंट के 4 दिन पहले यानी 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला हुआ था। इस कॉन्फ्रेंस को लेकर भारतीय स्टूडेंट्स ने हार्वर्ड के सामने अपना विरोध और आपत्ति दर्ज कराई।

कानपुर में राहुल को देख फफक पड़ीं शुभम की पत्नी

अमेठी/ रायबरेली/कानपुर (एजेंसी)। राहुल गांधी के यूपी दौरे का बुधवार को दूसरा दिन है। आज उन्होंने पहलगाम हमले में मारे गए कानपुर के शुभम द्विवेदी के परिजनों से मुलाकात की। शुभम की पत्नी ऐशन्या राहुल को देखकर रोने लगीं। इस पर राहुल ने उन्हें गले लगा लिया और सांत्वना दी। शुभम के पिता भी राहुल को देखकर अपने आंसू नहीं रोक पाए।ऐशन्या ने राहुल को पहलगाम में हुई घटना के बारे में सब कुछ बताया। उन्होंने बताया कि कैसे मेरे पति को आतंकियों ने गोली मार दी। ऐशन्या ने बताया कि हर जगह सुरक्षा की व्यवस्था थी, लेकिन पहलगाम में कोई सिक्योरिटी नहीं थी। ऐशन्या ने राहुल गांधी को बताया- 22 अप्रैल को दोपहर 2.25 बजे हम लोग लंच कर रहे थे। तभी नॉर्मल कपड़ों में एक आतंकी आया। उसने पूछा- हिंदू हो या मुसलमान? हिंदू कहते ही सिर्फ 5 सेकेंड में मेरे पति को गोली मार दी।

राहुल ने पूछा- यह सब कितनी देर तक चला? इस पर ऐशन्या ने कहा- करीब 45 मिनट तक आतंकियों ने खून-खराबा किया। वे आराम से लोगों से नाम पूछ-पूछकर उन्हें मार रहे थे। उन्हें यह टारगेट दिया गया था कि पत्नी के सामने पति की हत्या करनी है। वे महिलाओं से कहते थे कि जाकर अपनी सरकार को बताओ।

देश में आजादी के बाद पहली बार जातिगत जनगणना होगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में आजादी के बाद पहली बार जाति जनगणना कराई जाएगी। केंद्रीय कैबिनेट ने बुधवार को जाति जनगणना को मंजूरी दी। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि इसे मूल जनगणना के साथ ही कराया जाएगा। देश में इसी साल के आखिर में बिहार विधानसभा के चुनाव होने हैं। कांग्रेस समेत तमाम विपक्षी दल जाति जनगणना कराने की मांग करते रहे हैं। ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि जाति जनगणना की शुरुआत सितंबर में की जा सकती है। हालांकि जनगणना की प्रोसेस पूरी होने में एक साल लगेगा। ऐसे में जनगणना के अंतिम आंकड़े 2026 के अंत या 2027 की शुरुआत में मिल सकेंगे। देश में पिछली जनगणना 2011 में हुई थी। इसे हर 10 साल में किया जाता है। इस हिसाब से 2021 में अगली जनगणना होनी थी, लेकिन कोविड-19 महामारी के कारण इसे टाल दिया गया था। 2011 तक जनगणना फॉर्म में कुल 29 कॉलम होते थे। इनमें नाम, पता, व्यवसाय, शिक्षा, रोजगार और माइग्रेशन जैसे सवालों के साथ केवल स्ट और एससी कैटेगरी से ताल्लुक रखने को रिकॉर्ड किया जाता था। अब जाति जनगणना के लिए इसमें एक्स्ट्रा कॉलम जोड़े जा सकते हैं।

जनगणना एक्ट 1948 में एससी-एसटी की गणना का प्रावधान है। ओबीसी की गणना के लिए इसमें संशोधन करना होगा। इससे ओबीसी की 2,650 जातियों के आंकड़े सामने आएंगे। 2011 की जनगणना के अनुसार, 1,270 एससी, 748 एसटी जातियां हैं। 2011 में एससी आबादी 16.6 प्रतिशत और एसटी 8.6 प्रतिशत थी। मनमोहन सिंह सरकार के दौरान 2011 में सामाजिक-आर्थिक और जातिगत जनगणना करवाई गई थी। इसे ग्रामीण विकास मंत्रालय, शहरी विकास मंत्रालय और गृह मंत्रालय ने करवाया था। हालांकि इस सर्वेक्षण के आंकड़े कभी भी सार्वजनिक नहीं किए गए।

ग्रामीण विकास मंत्रालय की वेबसाइट पर इसके एससी-एसटी हाउसहोल्ड के आंकड़े ही जारी किए गए हैं।

श्रेयस, सूर्यकुमार के साथ कई खिलाड़ियों को मिला आइकन प्लेयर का दर्जा

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन ने 26 मई से शुरू हो रहे टी20 मुंबई लीग 2025 सीजन के लिए आइकन खिलाड़ियों की लिस्ट का ऐलान किया जिसमें भारत के टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव, श्रेयस अय्यर और अजिंक्य रहाणे समेत 8 खिलाड़ियों को रखा गया। टी20 मुंबई लीग की वापसी 6 साल के बाद हो रही है और ये आईपीएल 2025 के तुरंत बाद खेली जाएगी। इस लीग का समापन 8 मई को होगा। इस लीग के आइकन खिलाड़ियों की सूची में मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन ने सूर्यकुमार यादव, श्रेयस अय्यर, अजिंक्य रहाणे के अलावा सरफराज खान, शार्दुल ठाकुर, पृथ्वी शॉ, शिवम दुबे और तुषार देशपांडे को रखा है। एमसीए के अध्यक्ष अजिंक्य नाइक ने कहा कि हमें 8 आइकल खिलाड़ियों के नाम की घोषमा करते हुए खुशी हो रही है जिन्होंने घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने प्रदर्शन से मुंबई को बहुत गौरव दिलाया है। वे मुंबई क्रिकेट की भावना और विरासत प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके इस लीग में शामिल होने से ना सिर्फ उभरती हुई प्रतिभाओं को प्रेरणा मिलेगी बल्कि उनके लिए एक सीखने का अवसर भी होगा क्योंकि हम भारत के क्रिकेट सितारों की अगली पीढ़ी की खोच के लिए प्रतिबद्ध हैं।

दुष्मंथा चमीरा ने लपका कैच ऑफ द टूर्नामेंट, सुपरमैन की तरह हवा में उड़े

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेट मैच में कई बार फील्डिर ऐसा अद्भुत कारनामा अंजाम देते हैं कि आंखों पर यकीन करना मुश्किल हो जाता है। ऐसा ही कुछ कमाल दुष्मंथा चमीरा ने किया है। उन्होंने दिल्ली कैपिटल्स बनाम केकेआर मुकाबले में बेहद हैरतअंगेज कैच पकड़ा। श्रीलंकाई तेज गेंदबाज ने बाउंड्री पर सुपरमैन की तरह उढ़कर अनुकूल रॉयल को पवेलियन की राह दिखाई। अनुकूल का खाता नहीं खुला। दुष्मंथा की कैचकी खूब चर्चा हो रही है।

दिल्ली की ओर से 20वां ओवर मिचेल स्टार्क ने डाला। स्टार्क ने तीसरी गेंद पर रोवमैन पॉवेल (5) को एलबीडब्ल्यू किया। इसके बाद, बैटिंग करने उतरे अनुकूल ने आते ही फ्लिक किया। गेंद और बल्ला का अच्छा संपर्क हुआ। लगा कि गेंद बैकवर्ड स्क्वायर लेग के ऊपर से निकल जाएगी। हालांकि, दुष्मंथा ने ऐसा मुमकिन नहीं होने दिया। उन्होंने यही समय पर बाईं और हवा में डाइव लगाई और दोनों हाथों से बेहतरीन कैच लपक किया।

दुष्मंथा के कैच को लेकर सोशल मीडिया पर जमकर रिएक्शन आ रहे हैं। लोगों ने इसे कैच ऑफ द टूर्नामेंट करार दिया।

स्टार्क ने आखिरी ओवर में तीन विकेट झटके। ओवर की पांचवीं गेंद पर आंद्रे रसेल रनआउट हुए। उन्होंने पहली गेंद पर 106 मीटर का छक्का लगाया था। केकेआर ने निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट पर 204 का स्कोर खड़ा किया।

वैभव सूर्यवंशी ने अपनी प्रतिभा से सबको किया हैरान

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 में बीते सोमवार खेले गए राजस्थान रॉयल्स और गुजरात टाइटंस के बीच मुकाबले में 14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी ने जीटी के गेंदबाजों की धज्जियां उड़ाकर रख दी। आईपीएल 2025 में शतक जड़कर इतिहास रचने वाले वैभव सूर्यवंशी आज क्रिकेट जगत की सनसनी बन चुके हैं। आईपीएल ही नहीं, बल्कि प्रोफेशनल टी20 क्रिकेट में उनसे कम उम्र में दुनिया के किसी बल्लेबाज ने शतक नहीं जड़ा है। समस्तीपुर, बिहार के एक छोटे गांव से निकलकर इस खिलाड़ी ने अपनी प्रतिभा से सबको हैरान कर दिया।

वहीं वैभव सूर्यवंशी के बचपन के कोच मनीष ओझा को उम्मीद है कि उनका 14 वर्षीय शिष्य अगले एक या दो साल में भारत की टी20 टीम में जगह बना लेगा। वैभव ने सोमवार को 38 गेंदों में 101 रन की पारी खेलकर आईपीएल के सबसे युवा शतकवीर बनने का रिकॉर्ड बनाया। उनकी उम्र 14 साल और 32 दिन है। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने गुजरात टाइटंस के खिलाफ बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए 11 छक्के और सात चौके लगाए और राजस्थान रॉयल्स को जयपुर में आठ विकेट से जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

आईपीएल में कुलदीप यादव ने मारे रिंकू सिंह को चांटे

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 में 48वां मुकाबला कोलकाता नाइट राइडर्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच हुआ है। कोलकाता ने दिल्ली को उसके ही घर में 14 रनों से हरा दया है। अरुण जेटली स्टेडियम में मैच के बाद खिलाड़ियों ने आपस में बातचीत शुरू की। उस समय का वीडियो इंटरनेट पर जमकर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में कुलदीप यादव ने रिंकू सिंह को थप्पड़ मारा है। ये वीडियो जमकर वायरल हो रहा है। थप्पड़ मारे जाने के बाद रिंकू सिंह भी काफी गुस्से में दिखाई दिए। कुलदीप यावद दिल्ली कैपिटल्स की ओर से खेलते हैं जबकि रिंकू सिंह कोलकाता नाइट राइडर्स टीम का हिस्सा हैं।

दिल्ली में खेले गए मुकाबले के बाद मैदान पर दोनों टीमों के खिलाड़ी आपस में बात करते दिखे है। इस दौरान कुलदीप यादव और रिंकू सिंह भी है। बातचीत के दौरान ही कुलदीप रिंकू को किसी बात पर थप्पड़ मारते हैं। ऐसे में रिंकू खुद को बचाते हुए हंसने लगते है। कुछ ही देर में कुलदीप की बात को सुनकर वो चुप भी हो जाते है। कुलदीप फिर रिंकू को मारते हैं तो वो गुस्सा हो जाते है। सोशल मीडिया पर जमकर ये वीडियो चल रहा है। यूजर्स भी इस वीडियो को देखकर काफी हैरान हो गए है। यूजर्स का कहना है कि कुलदीप के व्यवहार से

रिंकू सिंह नाराज हो गए है। दिल्ली के खिलाफ मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स ने पहले बल्लेबाजी की थी। कोलकाता ने 204 रन बनाए थे। दिल्ली कैपिटल्स ने इस मैच में अच्छी शुरुआत नहीं की थी। सुनील नारायण और वरुण चक्रवर्ती की फिरकी के जादू से कोलकाता नाइट राइडर्स ने इंडियन प्रीमियर लीग में मंगलवार को यहां दिल्ली कैपिटल्स को 14 रन से हराकर प्ले ऑफ में जगह बनाने की अपनी उम्मीदों को जीवंत रखा। इस हार के बावजूद दिल्ली की टीम 10 मैच में 12 अंक के साथ चौथे स्थान पर बनी हुई है। नाइट राइडर्स इतने ही मुकाबलों में नौ अंक के साथ सातवें स्थान पर है। दिल्ली की पिछले चार मैच में यह तीसरी हार है। नाइट राइडर्स के 205 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए दिल्ली की टीम नारायण (29 रन पर तीन विकेट) और चक्रवर्ती (39 रन पर दो विकेट) की बलखाती गेंदों के सामने डु प्लेसी (62 रन, 45 गेंद, सात चौके, दो छक्के) के अर्धशतक और कप्तान अक्षर पटेल (43 रन, 23 गेंद, चार चौके, तीन छक्के) के साथ उनकी चौथे विकेट की 76 रन की साझेदारी के बावजूद नौ विकेट पर 190 रन ही बना सकी।

दिल्ली की ओर से डु प्लेसी और अक्षर के अलावा विपराज निगम (38 रन, 19 गेंद, पांच चौके, दो छक्के) ही 20 रन के आंकड़े को हार कर पाए। नाइट राइडर्स की टीम इससे पहले अंगकृष रघुवंशी (44 रन, 32 गेंद, तीन चौके, दो छक्के) और रिंकू सिंह (36 रन, 25 गेंद, तीन चौके, एक छक्का) की उम्दा पारियों और दोनों के बीच पांचवें विकेट के लिए 61 रन की साझेदारी से नौ विकेट पर 204 रन के चुनौतीपूर्ण स्कोर तक पहुंचने में सफल रही।

घर में डूबी दिल्ली कैपिटल्स की नैया

नई दिल्ली (एजेंसी)। मंगलवार को आईपीएल 2025 के 48वां मुकाबला दिल्ली कैपिटल्स और कोलकाता नाइट राइडर्स के बीच खेला गया। जिसे केकेआर ने 14 रन से जीत लिया। वहीं दिल्ली कैपिटल्स को एक बार फिर अपने घर पर हार का सामना करना पड़ा। केकेआर ने इस जीत के साथ प्लेऑफ की रेस में खुद को जिंदा रखा है। इस मुकाबले में केकेआर के जीत के हीरो सुनील नरेन रहे जिन्होंने गेंद और बल्ले दोनों से ही बेहतरीन प्रदर्शन किया।

टॉस गंवाकर पहले बल्लेबाजी करते हुए केकेआर की शुरुआत अच्छी रही। केकेआर के ओपनर रहमानुल्लाह गुरबाज और सुनील नरेन ने पहले तीन ओवर में 48 रन जोड़कर नाइट राइडर्स को तेज शुरुआत

दिलाई। इसके बाद कप्तान अजिंक्य रहाणे ने टीम के स्कोर को आगे बढ़ाया। वहीं अंगकृष रघुवंशी और रिंकू सिंह की बेहतरीन पारियों और दोनों के बीच अर्धशतकीय साझेदारी ने केकेआर को 200 रन के पार पहुंचा दिया।

केकेआर के लिए अंगकृष रघुवंशी ने सबसे ज्यादा 44 रन बनाए। वहीं रिंकू सिंह ने 36 रनों का योगदान दिया। इससे पहले गुरबाज ने 26 रन और नरेन ने 27 रन बनाए। कप्तान रहाणे ने भी 26 रनों की पारी खेली। दूसरी ओर दिल्ली के लिए मिचेल स्टार्क ने सबसे ज्यादा 3 विकेट चटकाए। विप्रज निगम और अक्षर पटेल ने 2-2 विकेट अपने नाम किए। इनके अलावा दुशमंथा चमीरा को एक विकेट मिला।

205 रनों का पीछा करते हुए दिल्ली कैपिटल्स की शुरुआत काफी खराब रही। उसने 4 रन पर ही अपना विकेट गंवाया। इसके बाद करुण नायर और केएल राहुल भी ज्यादा कुछ खास नहीं कर सके और अपना विकेट गंवा बैठे। हालांकि, फाफ डुप्लेसी और कप्तान अक्षर पटेल ने जूझारू पारियां खेलीं। फाफ ने 45 गेंदों में 62 रन बनाए और अक्षर पटेल ने 23 गेंद में 43 रन बनाए। इसके अलावा बाकी सभी बल्लेबाज फ्लॉप रहे। जिसके कारण दिल्ली 20 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 190 रन ही बना सकी। दूसरी ओर सुनील नरेन गेंद से भी सफल रहे। उन्होंने 4 ओवर में 29 रन देकर 3 बल्लेबाजों को अपना शिकार बनाया। उनके अलावा वरुण चक्रवर्ती ने 2 विकेट, वैभव अरोड़ा, आंद्रे रसेल और अनुकूल रॉय ने 1-1 विकेट अपने नाम किया।

युजवेंद्र चहल के हाथ लगा एमएस धोनी का बैट तो मैक्सवेल ने खींची टांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। पंजाब किंग्स के स्पिनर युजवेंद्र चहल की खुशी चार गुनी हो गई जब उन्हें एमएस धोनी का बैट मिला। चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान धोनी ने पंजाब के खिलाफ मैच से पहले चहल को अपना बल्ला गिफ्ट के रूप में दिया। हालांकि, चहल जब बैट लेकर ड्रेसिंग रूम में गए तो ग्लेन मैक्सवेल ने उनकी टांग खींची। युजी एक सवाल का जवाब नहीं दे पाए। पीबीकेएस ने चहल का दिलचस्प वीडियो इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। सीएसके वर्सेस पीबीकेएस आईपीएल 2025 का 49वां मुकाबला बुधवार को चेन्नई के एमए चिदंबरम स्टेडियम में खेला जाना है। बता दें कि, चहल को मौजूदा सीजन में बैटिंग का मौका नहीं मिला है। उन्होंने अभी तक एक भी गेंद नहीं खेली। पंजाब ने युजी को गेंदबाजी के समय इम्पैक्ट प्लेयर के रूप में इस्तेमाल किया है। चहल धोनी से बैट लेने के बाद ड्रेसिंग रूम में आए तो बहुत खुश थे। उनसे मैक्सवेल ने पूछा कि किसका बैट है? एमएस का, चहल ने कहा कि, हां इसके बाद मैक्सवेल ने पूछा कि तुम इस बैट का क्या करोगे? स्पिनर ने कहा कि, मैं खेलूंगा इससे। ऐसे में ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर मैक्सवेल ने कहा कि, तुम्हें तो हर मैच में बाहर बैठना पड़ता है। इसके बाद चहल ने कोई जवाब नहीं दिया और सिर्फ मुस्कुराते हुए नजर आए।

चहल जब किट बैग में बल्ले को रखने गए, तब पीबीकेएस के युवा सलामी बल्लेबाज प्रियांश आर्य उनके पास आए। उन्होंने भी चहल के मजे लेने की कोशिश की। प्रियांश ने कहा कि, कोई ना कोई हरियाणा का लड़का पक्का ये बैट ले लेगा। युजी ने इस पर कहा कि, कोई चांस ही नहीं है। चहल का वीडियो शेयर करते हुए पंजाब ने हंसने वाली इमोजी के साथ कैप्शन लिखा कि, युजी भाई, एक और बैट खाते में, चहल ने 2016 में धोनी की कप्तानी में इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया था।

वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे की चमकेगी किस्मत, इंग्लैंड के खिलाफ टीम इंडिया में मिलेगी जगह!

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में इन दिनों आईपीएल 2025 की धूम मची हुई है और टूर्नामेंट में एक के बाद एक धमाकेदार मुकाबले खेले जा रहे हैं। आईपीएल के समापन के बाद भारत को इंग्लैंड के दौरे पर 5 मैचों की टेस्ट सीरीज खेलने के लिए रवाना होना है। इसी दौरान भारत की अंडर-19 टीम भी इंग्लैंड का दौरा करेगी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, भारत की अंडर-10 टीम के इस दौरे के दौरान वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे भी स्क्वॉड का हिस्सा होंगे।

बता दें कि, टीम इंडिया इस दौरे पर 5 वनडे और दो टेस्ट मुकाबले खेलेगी। बीसीसीआई के सूत्रों के मुताबिक 21 जून को टीम यूके लैंड करेगी इस दौरे पर 14 वर्षीय युवा बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे जैसे खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिल सकता है। दोनों खिलाड़ी इस समय आईपीएल 2025 में धमाल मचा रहे हैं। वैभव जहां राजस्थान रॉयल्स की टीम का हिस्सा हैं। वहीं, आयुष म्हात्रे चेन्नई सुपर किंग्स के लिए खेल रहे हैं। इन दोनों के अलावा भी कुछ अन्य खिलाड़ियों को स्क्वाड में शामिल किया जा सकता है। इंग्लैंड का ये आगामी दौरा भारत की अंडर-19 टीम के लिए अहम तैयारी का काम करेगा। क्योंकि वे अंडर-19 वर्ल्ड कप के लिए कमर कस रहे हैं, जो अगले साल जनवरी में जिम्बाब्वे और नामीबिया में आयोजित होने वाला है। पिछली बार भारत की अंडर-19 टीम पिछले साल दिसंबर में यूएई में आयोजित एशिया कप के दौरान खेली थी, जहां उन्होंने फाइनल तक का सफर तय किया था, लेकिन आखिर में उन्हें बांग्लादेश के खिलाफ हार झेलनी पड़ी।

शिखर धवन की लताड़ के बाद भी नहीं सुधरा शाहिद अफरीदी, अब कर दी ये गिरी हुई हरकत

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय क्रिकेटर शिखर धवन ने पहलगाम हमले पर बयान देने के लिए शाहिद अफरीदी को जमकर लताड़ लगाई है। शिखर धवन ने कहा है कि पहले ही इतना गिरे हुए हो, और कितना गिरोगे। गौरतलब है कि समा टीवी पर बात करते हुए शाहिद अफरीदी ने भारतीय सेना के ऊपर सवाल उठाए थे। इसके बाद पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर की जमकर आलोचना हो रही है। इसी कड़ी में शिखर धवन ने अफरीदी को जमकर सुनाया है। गौरतलब है कि शिखर धवन ने 24 अगस्त 2024 को सभी तरह के क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। धवन ने अपने अंतर्राष्ट्रीय करियर की 288 पारियों में 10,867 रन बनाए हैं। वह भारत की 2013 की चैंपियंस ट्रॉफी विजेता टीम के सदस्य रहे हैं। शिखर धवन एक्स इसको लेकर एक्स पर लिखा है। बाएं हाथ के बल्लेबाज ने लिखा कि कारगिल में भी हराया था। पहले ही इतना गिरे हुए हो और कितना गिरोगे। बेवजह कमेंट्स पास करने से अच्छा है अपने देश की तरक्की में दिमाग लगाओ। धवन ने शाहिद अफरीदी को मेंशन भी किया है। उन्होंने आगे लिखा है कि हमें हमारी इंडियन आर्मी पर बहुत गर्व है। भारत माता की जय, जय हिंद। बता दें कि पहलगाम हमले के बाद भारत सरकार ने एक्शन लेते हुए तमाम पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटरों के यूट्यूब चैनल्स को भारत में प्रतिबंधित कर दिया है। इनमें शोएब अख्तर, बासित अली, राशिद लतीफ और कामरान अकमल के नाम शामिल हैं।

इससे पहले शिखर धवन ने भारतीय सेना के अफसरों के साथ एक वीडियो शेयर किया था। इसमें वह सैनिकों के साथ भारत माता की जय के नारे लगाते नजर आ रहे हैं। धवन ने इस बात पर जोर दिया कि कश्मीर हमेशा से भारत का हिस्सा रहा है। धवन ने इस वीडियो को इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। उन्होंने इसके कैप्शन में लिखा है, एक दिल, एक आवाज। कश्मीर हमारा था, है और रहेगा।

रोहित शर्मा मना रहे 38वां जन्मदिन

नई दिल्ली (एजेंसी)। आज यानी की 30 अप्रैल को भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान और दिग्गज ओपनर रोहित शर्मा अपना 38वां जन्मदिन मना रहे हैं। वह हिटमैन के नाम से भी जाने जाते हैं और रोहित शर्मा ने अपने करियर में कई रिकॉर्ड बनाए हैं। रोहित शर्मा ने विश्व क्रिकेट में भारत का नाम रोशन किया है। रोहित शर्मा जितने खतरनाक बल्लेबाज हैं, उससे कहीं ज्यादा वह चतुर-चालाक कप्तान हैं। पिछले कुछ सालों के उनके बेहतरीन प्रदर्शन ने दुनिया भर में लाखों लोगों का दिल जीत लिया है। तो आइए जानते हैं उनके बर्थडे के मौके पर रोहित शर्मा के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार

महाराष्ट्र के नागपुर में 30 अप्रैल 1987 को रोहित शर्मा का जन्म हुआ था। वह एक साधारण परिवार से ताल्लुक रखते थे। इनके पिता का नाम गुरुनाथ शर्मा था, जोकि एक ट्रांसपोर्ट फर्म में केयरटेकर थे। वहीं उनकी मां का नाम पूर्णिमा शर्मा था। रोहित शर्मा ने स्वामी विवेकानंद इंटरनेशनल स्कूल से अपनी शिक्षा पूरी की।

क्रिकेट करियर

रोहित शर्मा ने साल 1999 में एक क्रिकेट कैंप जॉइन किया था। उन्होंने अपने क्रिकेट करियर की शुरूआत ऑफ स्पिनर की थी। तब वह थोड़ी बहुत बल्लेबाजी कर पाते थे। लेकिन कोच दिनेश लाड ने जल्द ही रोहित के बैटिंग टैलेंट को पहचान लिया और उनको नंबर 8 से सीधा पारी का आगाज करने भेज दिया। इस टूर्नामेंट में रोहित ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और बतौर ओपनर उन्होंने डेब्यू मुकाबले में शतक लगाया। रोहित शर्मा ने साल 2007 में आयरलैंड के खिलाफ एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू किया था। एक दिवसीय मैचों में रोहित शर्मा अपने दोहरे शतकों के लिए जाने जाते हैं। इसी साल सितंबर में रोहित ने अपना टी-20 डेब्यू इंग्लैंड के खिलाफ किया। हालांकि उनको टेस्ट डेब्यू के लिए काफी इंतजार करना पड़ा। वहीं 6 साल बाद यानी की 2013 में वह पहली बार सफेद जर्सी पहनकर मैदान में उतरे थे।

माही के फैसले ने बदला रोहित का करियर

जब रोहित ने इंटरनेशनल करियर की शुरूआत की, तो वह बल्लेबाजी में फिनिशर की भूमिका निभाते थे। साल 2007 में टी 20 वर्ल्ड कप में भी वह फिनिशन बनकर मैदान में नजर आए थे। साल 2013 में इंग्लैंड में खेली गई चैंपियंस ट्रॉफी में एमएस धोनी के एक फैसले से रोहित शर्मा का करियर पलट गया। दरअसल, माही ने रोहित को सलामी बल्लेबाज के तौर पर मैदान में उतारा, जिसके बाद हिटमैन ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

इंटरनेशनल करियर

भारत की तरफ से रोहित शर्मा अब तक कुल 461 इंटरनेशनल मैच खेल चुके हैं।

उन्होंने 52 टेस्ट मैचों में 46.54 की औसत से कुल 3,677 रन बनाए हैं। रोहित के बल्ले से 10 शतक और 16 अर्द्धशतक निकले हैं। वहीं इंटरनेशनल लेवल पर रोहित शर्मा 4 शतक और 29 अर्द्धशतक लगा चुके हैं।

नियमों के विपरीत चलने के कारण बंद हुए थे क्रेशर फिर से शुरू हुई मशीनें

सिया के नियमों की धज्जिया उड़ाकर चल रहे अवैध स्टोन क्रेशरों पर खनिज विभाग की मेहरबानी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले में सैकड़ो स्टोन क्रेशर सिया के नियमो की धज्जिया उड़ाते हुए संचालित है. अधिकांश स्टोन क्रेशर सफेद पोषधारियों के है जिसके कारण अवैध रूप से संचालित क्रेशरो पर खनिज विभाग मेहरबान है और यही वजह है कि कोई कार्यवाही नही होती है जबकि जिस क्षेत्र में मानक के विपरीत स्टोन क्रेशर संचालित हो रहे हैं वहां पर्यावरण प्रदूषण लगातार बढ़ता ही जा रहा है परंतु फिर भी प्रशासन ऐसा कोई भी एक्शन नहीं ले रहा है जिससे अवैध रूप से संचालित स्टोन क्रेशरो पर लगाम लगाई जा सके।

बताया जा रहा है कि स्टोन क्रेशरों में सिया के नियमो का पालन नही हो रहा है तथा जिम्मेदार विभाग तमाशा देख रहा है और जिले के बेला, बैजनाथ, हर्रहा, मरजादपुर, सिजवार, बनकुइया, हिनौती, सकरवट, भोलगढ़, कचूर, खमरिहा सहित दर्जन भर गांवो में अवैध रूप से स्टोन क्रेशर संचालित हैं जो सिया के नियमो की धज्जिया उड़ा रहे है

तथा पर्यावरण प्रदूषण फैला रहे है वहीं सिया की जो गाइड लाइन है उसका पालन नही हो रहा है और नियमो की धज्जियां उड़ाते हुए स्टोन क्रेसर संचालित है।

जानकारी के मुताबिक एनजीटी में लगाई गई याचिका की सुनवाई करते हुए 6 सप्ताह के अंदर कमेटी बनाकर पर्यावरण प्रदूषण व नियम विरूद्ध संचालित क्रेशरो के विरूद्ध कार्यवाही के निर्देश हुए थे जिसपर कुछ क्रेशरो को बंद किया गया था और उसके बाद अब पुनः नियमो का धता बताकर स्टोन क्रेशर संचालित हैं जबकि जिले भर में अवैध रूप से संचालित तमाम स्टोन क्रेशरो की जानकारी जिला खनिज अधिकारी को है लेकिन दबाव के चलते कोई कार्यवाही यहां नही की जाती है।

सिया के नियमों का खुला उल्लंघनः आपको बता दें लोगों के द्वारा समय-समय पर अवैध उत्खनन एवं सिया के नियमो का उल्लंघन कर संचालित स्टोन क्रेशरो को लेकर आवाज उठाई जाती रही है इसके साथ ही पर्यावरण प्रदूषण को लेकर एनजीटी में भी याचिका लगाई जा चुकी है जिसमें कमेटी भी बनी जांच हुई, लेकिन उसके बाद भी नियमो का पालन नहीं हुआ। मामले पर सामजिक कार्यकर्ता बी. के माला ने बताया कि रीवा के पश्चिमी क्षेत्र में सिया के नियमो का उल्लंघन कर स्टोन क्रेसर संचालित है और फर्जी लीज का खेल यहां चल रहा है परंतु फिर भी खनिज विभाग कोई कार्यवाही नही कर रहा है, पर्यावरण प्रदूषण को लेकर कोई उपाय नही है जिसकी वजह से अब वह एनजीटी में जल्द ही पूरे मामले को लेकर जायेगे बीके माला का मानना है कि नियमों का पालन न करने वाले तमाम स्टोन क्रेशर सफेद पोशधारियो के है जिसकी वजह से प्रशासन कार्यवाही करने से पीछे हटता है।

मनमानी फीस वृद्धि पर बिल्लाबांग स्कूल पर दो लाख का जुर्माना

शिकायत पर कलेक्टर ने जांच के बाद की कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले के चोरहटा स्थित बिल्लाबांग हाई इंटरनेशनल स्कूल पर मनमानी फीस वृद्धि के मामले में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने दो लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। स्कूल ने सत्र 2025-26 के लिए निर्धारित 10 प्रतिशत की सीमा से अधिक 11 से 12.6 प्रतिशत तक फीस बढ़ा दी थी।

प्राप्त शिकायतों पर गठित चार सदस्यीय जांच दल ने पाया कि स्कूल प्रबंधन ने 19 फरवरी 2025 को नई फीस संरचना पोर्टल पर अपलोड की, लेकिन मध्य प्रदेश निजी विद्यालय (फीस तथा संबंधित विषयों का विनियमन) अधिनियम 2017 के तहत आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए। यह वृद्धि जिला स्तरीय कमेटी से भी अनुमोदित नहीं थी।

जिला शिक्षा अधिकारी ने स्कूल को कारण बताओ नोटिस जारी कर तीन दिन में जवाब मांगा। स्कूल ने 24 अप्रैल को अपना जवाब प्रस्तुत किया। जिला समिति की जांच में फीस वृद्धि स्कूल शिक्षा विभाग के 2 दिसंबर 2020 के नियमों का उल्लंघन पाई गई, जिसके बाद स्कूल पर जुर्माना लगाया गया।

भगवान परशुराम जयंती पर सतना में धार्मिक आयोजन

पूजा-पाठ, उपनयन संस्कार और शोभायात्रा में उमड़े श्रद्धालु

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में भगवान परशुराम जयंती का आयोजन विधिवत रूप से किया गया। जिले में कई स्थानों पर विशेष धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। मुख्तयारगंज स्थित व्यंकटेश वाटिका में विप्र समाज ने पूजन-पाठ के साथ विचार गोष्ठी का आयोजन किया। कमलाकर चतुर्वेदी सहित समाज के प्रमुख लोगों ने विप्र समाज को संगठित करने का आह्वान किया। कार्यक्रम में विप्र समाज के बच्चों का उपनयन संस्कार भी संपन्न हुआ।

बदखर स्थित भगवान परशुराम मंदिर में पूजा-अर्चना के साथ हवन का आयोजन किया गया। समाज के लोगों ने कन्या भोज का आयोजन भी किया।

गैविनाथ धाम बिरसिंहपुर में शोभायात्रा का आयोजन किया गया। विप्र बंधुओं ने तलवार और फरसा लेकर जयकारे लगाए। शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होकर गुजरी। चित्रकूट एसडीओपी रोहित राठौर के नेतृत्व में पुलिस बल तैनात रहा। सतना शहर में भी विप्र समाज ने शोभायात्रा निकालकर भगवान परशुराम जयंती मनाई।

बिल्डिंग से कूदी महिला की 48 घंटे बाद हुई पहचान

आईएमईआई नंबर से लगा पता, परिजनों ने नहीं दर्ज कराई थी गुमशुदगी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। समान थाने से 100 मीटर दूर समदडिया मल्टी के छठे फ्लोर से कूदकर आत्महत्या करने वाली महिला की पहचान 48 घंटे बाद हो पाई। मोबाइल के आईएमआई नंबर से पुलिस ने मृतका की पहचान नीलू सिंह गौड़ (25) पत्नी राघवेंद्र सिंह, निवासी अहिरान पंचायत भमरा टोला, थाना रामपुर नैकिन, जिला सीधी के रूप में की। मृतका की सास सुकवरिया ने बताया कि एकादशी से तीन दिन पहले नीलू मायके में किसी के अंतिम संस्कार में जाने की बात कहकर निकली थी। उसके बाद से कोई जानकारी नहीं थी। पुलिस ने साइबर सेल के माध्यम से रामपुर नैकिन थाना क्षेत्र में संपर्क किया, तब शव की पहचान हो पाई।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक लाल ने बताया कि महिला ने आत्मघाती कदम क्यों उठाया, इसकी अभी पुष्टि नहीं हो पाई है। परिजनों ने कोई गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई थी। दो साल पहले हुई शादी के बाद महिला की कोई संतान नहीं थी। उसका पति राघवेंद्र मनेंद्रगढ़ में जेसीबी चालक है।

एक दुकान में लगे कैमरे में नीचे गिरते दिखीः महिला के मल्टी से नीचे गिरते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए। पुलिस को सूचना दी। जिसके बाद समान थाना पुलिस मौके पर पहुंची। शव को संजय गांधी अस्पताल भिजवाया गया। इसके बाद पुलिस शव की शिनाख्त और उसके परिजन की तलाश में जुट गई थी।

मारपीट के मामले में सजा काट रहा था

रीवा में कैदी की मौत पर परिजनों को संदेह, हत्या की आशंका जताई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा केंद्रीय जेल में एक कैदी की मौत हो गई। वह मारपीट के मामले में सजा काट रहा था। परिजनों ने पुरानी रंजिश को लेकर पूरे मामले में हत्या की आशंका जताई है। उनका कहना है कि आज सुबह कैदी राजकुमार साकेत की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। जिनके अस्पताल में एडमिट करवाए जाने की सूचना परिजनों को नहीं दी गई। उसे किसी तरह की कोई बीमारी नहीं थी।

मृतक की पत्नी शिवकुमारी साकेत ने आरोप लगाया कि उन्हें जेल में पदस्थ कर्मचारियों रामशरण वर्मा और सत्येंद्र वर्मा पर शक है। जिनके साथ उनका पुराना पारिवारिक विवाद था। उसे धमकाया भी गया था। मृतक के जीजा शिवेंद्र कुमार साकेत ने

बताया कि परिजनों को मौत की अलग-अलग सूचनाएं दी गईं पहले फांसी और फिर हार्ट अटैक बताया गया। सीएमओ अतुल सिंह ने बताया

कि कैदी को अस्पताल में इलाज के लिए लाया गया था। जिसके सुबह 5 बजकर 48 मिनट में मौत हो गई।जेल अधीक्षक एस के त्रिपाठी के मुताबिक तबीयत बिगड़ने पर संजय गांधी अस्पताल भेजा गया था। जहां मौत के बाद शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है। आरोप निराधार हैं।

कमिश्नर आज करेंगे विभागीय कार्यों की समीक्षा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर बीएस जामोद एक मई को संभागीय बैठक में विभागीय कार्यों की समीक्षा करेंगे। बैठक कमिश्नर कार्यालय सभागार में दोपहर 12.30 बजे से आरंभ होगी। बैठक में टीएल पत्रों के निराकरण, सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण, जल गंगा संवर्धन अभियान संभागीय बैठक के एजेण्डा बिन्दुओं में कार्यवाही के पालन प्रतिवेदन तथा पेंशन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की जाएगी। सभी संभागीय अधिकारियों को अद्यतन जानकारी के साथ बैठक में उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं।

सतना में एक लाख नकद और जेवर चोरी, पत्नी को स्टेशन से लेने गए थे मकान मालिक, लौटे तो टूटा मिला ताला

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में मंगलवार-बुधवार की दरमियानी रात सिविल लाइन थाना क्षेत्र के हरमल्ला में एक घर से चोरी हुई। चोरों ने पशुपतिनाथ मंदिर के पीछे स्थित मकान का ताला तोड़कर एक लाख रुपए नकद और सोने-चांदी के जेवर चुरा लिए।

मकान मालिक रजनीश शुक्ला सिंटेक्स कंपनी में मार्केटिंग का काम करते हैं। वे मंगलवार की रात भरहुतनगर में रिश्तेदार के यहां रुके थे। उन्हें रात 3 बजे रेलवे स्टेशन से अपनी पत्नी को लेना था। पत्नी को भरहुतनगर छोड़ने के बाद जब सुबह 4 बजे वे घर पहुंचे, तो दरवाजा टूटा मिला। अंदर अलमारी का ताला टूटा था और सामान बिखरा पड़ा था।

अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्जः रजनीश की पत्नी कुछ दिनों से भोपाल गई थी। घर में कोई नहीं था। पीड़ित ने सिविल लाइन थाने में शिकायत दर्ज कराई है। टीआई योगेंद्र सिंह की टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पीड़ित परिवार को आशंका है कि मझगवां भट्ठा के जुआरियों का इस वारदात में हाथ हो सकता है।

बस और ट्रक के बीच फंसी बाइक, चालक की मौत

रीवा में जवा की तरफ जा रहा था; बरदहा घाटी के पास हादसा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में बस और ट्रक के बीच फंसने से बाइक सवार की मौत हो गई। पुलिस ने दोनों वाहनों को हटवाकर बाइक सवार को बाहर निकाला। मृतक की पहचान रघुनंदन अहिरवार निवासी जोहना गांव थाना जवा के रूप में की गई है। घटना बुधवार दोपहर की है।

शव को पोस्टमार्टम के लिए सिविल अस्पताल सिरमौर भेजा है।

बाइक सवार अतरैला थाना क्षेत्र के बरदहा घाटी पर पहुंचा। तभी वाहन को ओवरटेक करने के चक्कर में बस और ट्रक के बीच में फंस गया। दोनों वाहनों के बीच में फंसने से बाइक सवार की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई।

बताया गया कि नीलकंठ बस और ट्रक एक-दूसरे को ओवरटेक करने को कोशिश कर रही थी। बस जवा की तरफ जा रही थी। जबकि ट्रक जवा की तरफ से लौट रहा था। वहीं बाइकसवार जवा की तरफ जा रहा था।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक लाल ने बताया कि पुलिस ने मर्ग की कायमी कर मामले की जांच शुरू कर दी है। मृतक के शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवा दिया गया है। किसकी लापरवाही से मौत हुई है। इसका पता लगाया जा रहा है।

15 करोड़ की लागत से बनेगा कॉलेज और हॉस्टल, 600 बेड के अस्पताल की भी मंजूरी

सतना मेडिकल कॉलेज में नर्सिंग कॉलेज का भूमि पूजन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मेडिकल कालेज में 15 करोड़ की लागत से नर्सिंग कॉलेज और हॉस्टल बनने जा रहा है। बुधवार की शाम डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ला ने मेडिकल कॉलेज कैंपस में भूमि पूजन किया। इस दौरान राज्य मंत्री प्रतिमा बागरी, सांसद गणेश सिंह, महापौर योगेश ताम्रकार सहित भारी संख्या में शहर के गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। भूमि पूजन कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से चर्चा में डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ला ने कहा कि जैतवारा थाना गोली कांड का अपराधी जल्द ही पकड़ा जाएगा। प्रदेश की मोहन यादव सरकार अपराध पर जीरो टॉलरेंस की नीति पर काम कर रही है। डिप्टी सीएम ने कहा नर्सिंग कॉलेज सतना जिले के लिए बड़ी सौगात है।

600 बेड के अस्पताल की भी मंजूरीः पौने चार सौ करोड़ की लागत से बनकर तैयार होने वाले छह सौ बेड के अस्पताल की भी

मंजूरी मिल गई है। जल्द ही मुख्य मंत्री द्वारा उसका भी भव्य भूमि पूजन किया जाएगा। इतना ही नहीं उन्होंने जल्द ही मेडिकल कॉलेज से छिन चुकी कैंसर यूनिट चालू किए जाने का भी भरोसा जताया है।

अक्षय तृतीया पर सोना-चांदी की खरीदारी करने पहुंच रहे लोग

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में अक्षय तृतीया के अवसर पर सराफा बाजार में बुधवार को खासी रौनक देखने को मिल रही है। सुबह 11 बजे से ही बाजार में ग्राहकों की भीड़ है। वैवाहिक मुहूर्त शुरू होने के कारण भी बाजार में चहल-पहल रही। सराफा संघ के अवीश सराफ के अनुसार, सोने-चांदी के दाम बढ़े होने से व्यापार में थोड़ी कमी है फिर भी विवाह मुहूर्त के कारण लोग शुभ दिन पर खरीदारी कर रहे हैं इस साल अक्षय तृतीया विशेष ज्योतिषीय संयोगों के साथ आई है।

पंडित प्रमोद मिश्रा ने बताया कि यह पर्व वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार, इस दिन किया गया दान और पूजा कई गुना फल देते हैं। मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिए यह दिन विशेष माना जाता है।

ज्योतिष शास्त्र में अक्षय योग तब बनता है जब राशि से दूसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें भाव में चंद्रमा और गुरु का संयोग होता है। हिंदू धर्म में अक्षय तृतीया को साल के साढ़े तीन अबूझ मुहूर्तों में से एक माना जाता है। इस दिन बिना मुहूर्त देखे शुभ और मांगलिक कार्य किए जा सकते हैं।

नीट परीक्षा के लिए कंट्रोल रूम स्थापित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा जिले में निर्धारित 13 परीक्षा केन्द्रों में 4 मई को नीट यूजी की परीक्षा आयोजित की जा रही है। परीक्षा सुबह 11 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक होगी। परीक्षा के संबंध में उम्मीदवारों को सूचनाएं प्रदान करने के लिए जिला स्तरीय कंट्रोल रूम कलेक्टर कार्यालय में बनाया गया है। इसका फोन नंबर 07662-255143 इस संबंध में अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी ने बताया कि कंट्रोल रूम 4 मई को सुबह से परीक्षा समाप्त होने तक चालू रहेगा। इसका प्रभारी अनिल दुबे संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय को बनाया गया है। कंट्रोल रूम में सहायक प्रभारी के रूप में जीवेन्द्र सिंह परियोजना अधिकारी महिला एवं बाल विकास को तैनात किया गया है। अपर कलेक्टर ने तैनात अधिकारियों और कर्मचारियों को 4 मई को कंट्रोल रूम अनिवार्य रूप से उपस्थित रहकर निर्देशों के अनुसार समस्त कार्यावाहियां सुनिश्चित करने के निर्देश दिये हैं।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।